thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१७, संयुक्तांकः-४-५; अक्टूबर-नवम्बर, सन्-२०१४, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १६१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १०० रुपये

श्रीराम के भक्तों ने उनके चित्र को ही अपनाया है, चरित्र को नहीं!

रामभक्त यथार्थ में राम जैसा बनें तो बात बने

-आचार्य राजवीर शास्त्री-

लाला दीपचंद आर्य द्वारा संस्थापित 'आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली' के उन्नायक, 'दयानन्द संदेश' के सम्पादक श्री राजवीर शास्त्री का पिछले दिनों असामयिक निधन हो गया। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, तथा संस्कार विधि की शास्त्रीजी द्वारा लिखित भूमिकाएँ उनके अगाध पाण्डित्य का परिचय देती हैं। दीपावली के पावन पर्व पर श्रीराम के जीवनादर्शों पर लिखित उनका एक लेख श्रद्धांजलि के रूप में हम प्रकाशित कर रहे हैं। -सं.

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का पावन चरित्र आज लाखों वर्षों बाद भी जन-जन को प्रेरणा व मार्गदर्शन कर रहा है, इसका सर्वातिशय कारण है उनका वैदिक मर्यादामय समस्त जीवन। बचपन से लेकर जीवन पर्यन्त उनके जीवन के जब हम किसी भी भाग पर दृष्टिपात करते हैं तो उनके जीवन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं मिलता। चाहे उनका विद्यार्थी जीवन हो, या गृहस्थ, चाहे प्रशासन का रूप हो, या क्षत्रिय रूप, अथवा पिता-पुत्र, पति-पत्नी, राजा-प्रजा, स्वामी-सेवक, गुरु-शिष्य या भ्रातृ रूप हो, सर्वत्र एक नियमित आदर्श जीवन मिलने से ही उनके नाम के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम नाम जुड़ा है, जो उनके पावन उज्ज्वल जीवन का परिचायक है। उनके इस विशेषण को आज तक कोई महापुरुष सर्वांश में नहीं अपना सका है। इसलिए महर्षि वाल्मीकि ने नारद मुनि से जब यह पूछा-

'इस मर्त्यलोक में कौन ऐसा महापुरुष है जो पराक्रमी, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी, दृढ़व्रती, सच्चरित्र, परोपकारी, विद्वान्, शक्तिमान् जितेन्द्रिय समदर्शी तथा आकुतोभय आदि गुणों से सम्पन्न हो।' तब इसके उत्तर में नारद जी ने कहा- 'भगवन्! यद्यपि आपने जिन सद्गुणों का कथन किया है, उनको किसी व्यक्ति में समन्वित रूप में मिलना अति दुर्लभ है, पुनरपि इक्ष्वाकुवंश में राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम ही आजकल ऐसे दिव्यगुणों से सम्पन्न हैं, जिनकी विमल धवल यशःपताका मर्त्यलोक में सर्वत्र निर्विरोध फहरा रही है। श्रीराम साक्षात् धर्मावतार तपस्वी, त्यागी जितेन्द्रिय, समुद्र के समान गम्भीर, विष्णु के समान पराक्रमी, हिमालय की भांति धैर्यवान्, धर्म के रक्षक वेद वेदांगों के विद्वान्, धनुर्विद्या के पारंगत, सत्यवादी, सब के प्रति समता रखने वाले, हृष्ट-पुष्टाँग प्रजा के धर्मपूर्वक रक्षक, सज्जनों को प्रिय किन्तु शत्रुओं का मानमर्दन करने वाले आर्य पुरुष हैं।'

आज उस महापुरुष की जन्मभूमि की दुर्दशा तथा श्रीराम के वंशजों की मनोव्यथा का कारण है कि श्रीराम के भक्तों एवं अनुयायियों के अपने कुत्सित आचरण तथा महान् पराक्रमी शूरवीर क्षत्रिय श्रीराम के निर्बल भक्तों के द्वारा राम की प्रतिमा को लेकर अकिंचन व असहाय बना देना, ऐसे कर्मठ दिग्विजयी सम्राट् के नाम पर भिक्षावृत्ति करना एवं उनके मंदिरों की रक्षार्थ याचना करना यह स्पष्ट करता है कि श्रीराम के भक्तों ने चित्र को ही अपनाया है, चरित्र को नहीं। यदि उनके चरित्र को अपनाकर राम के भक्त अपने को यथार्थ में राम जैसा बनाने का प्रयास करें तो इस धरातल पर किस व्यक्ति की शक्ति है कि जो श्रीराम के प्रति स्वप्न में भी दुर्भावना रख सके, किसकी माता ने उसे दूध पिलाया है कि जो श्रीराम की जन्मभूमि व उनके भक्तों के प्रति कुदृष्टि से देख भी सके, और कौन अपने को शूरवीर समझता हुआ श्रीराम के भक्तों को ललकारने का दम्भ या दुस्साहस कर सकेगा। जिस श्रीराम ने समुद्र को पार करके भी दंभ के बीज रावण जैसे पराक्रमी के भी उसी की जन्मभूमि पर दांत खट्टे ही नहीं किये, प्रत्युत उसके अनुयायियों को भी समूल नष्ट कर दिया था किन्तु आज उनके भक्तों की अपनी ही जन्मभूमि पर यदि दुर्दशा हो रही है, तो मात्र कारण है कि श्रीराम के चरित्र की पूजा न करना। आओ, जहाँ हम अपनी हीनता व दुरवस्था पर मिलकर विचार करें, वहाँ श्रीराम के पावन व प्रेरक जीवन चरित्र से भी कुछ सीखें।

संसार में हम देखते हैं कि जब कभी हमारी इच्छापूर्ति में कोई छोटा मोटा भी आघात उपस्थित करता है, तो हम उसके प्रति कुपित ही नहीं प्रत्युत मरने-मारने को भी तैयार हो जाते हैं। किन्तु श्रीराम असाधारण योगीसम स्थितप्रज्ञ थे जो बड़े

से बड़े कष्ट के समय में भी लेशमात्र विचलित नहीं होते थे-

न वनं गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रियः।।
आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।

अर्थात् जिस समय श्रीराम को राजतिलक के लिए बुलाया गया तथा जिस समय उनको १४ वर्ष के वनवास के लिए कहा गया, ऐसे हर्षविषाद के समय में भी श्रीराम की मुखाकृति में कोई अन्तर नहीं था अर्थात् न तो युवराज बनने की खुशी और न ही वनवास जाते समय किंचिदपि विषाद के चिन्ह थे। ऐसा सुख-दुःख में समता से रहने वाला व्यक्ति पूर्ण देवज्ञ व स्थितप्रज्ञ ही हो सकता है।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक कितने ही राजा हो चुके हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे, किन्तु जब कोई आदर्श राज्य या प्रशासन की बात करता है तो सर्वप्रथम अग्रगण्य श्रीराम का नाम बड़े आदर से लेता है, इसका मुख्य कारण राम का प्रजावात्सल्य, प्रजानुरंजन तथा जनभावना का आदर करके प्रजा को सर्वात्मना पुत्रवत् संरक्षण देना तथा असुरों का संहार करके सज्जनों की रक्षा करना है।

श्रीराम के राज्य में साम्राज्यवाद तथा प्रजातंत्र के सभी दोषों का अभाव था। श्रीराम के सच्चरित्र, वीरता न्यायप्रियता आदि गुणों का ही ऐसा प्रभाव था कि किसी आसुरीवृत्ति वाले मनुष्य का दुष्कर्मों में रत होने का साहस ही नहीं होता था।

विश्व के इतिहास में श्रीराम की पितृभक्ति जैसा उदाहरण मिलना अतीव दुर्लभ है। श्रीराम प्रतिदिन प्रातः सायं अपने माता-पिता को सादर प्रणाम करके उनका शुभाशीर्वाद प्राप्त करते थे। और जब कभी बाहर से आते थे, तब भी चरण स्पर्श करके प्रणाम करते थे।

वचनों से बंधे राजा दशरथ से महारानी कैकेयी कहती है कि एक वरदान में श्रीराम को वनवास और दूसरे वरदान में भरत को युवराज बनाया जाये। उस समय राजा दशरथ की दशा बहुत दयनीय हो गई थी। क्योंकि वे प्राणप्रिय राम को अलग नहीं करना चाहते थे और अपने वचनों का पालन भी करना चाहते थे। पिता के मुख से किसी प्रकार का आदेश न पाकर किन्तु खिन्न देखकर कैकेयी से श्रीराम जो कुछ कहते हैं, वह सब उनकी पितृभक्ति की दृढ़ता का परिचायक ही नहीं, प्रत्युत उनकी कठिन अग्निपरीक्षा का भी समय होता है। श्रीराम कहते हैं-

अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावके।।
भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं मज्जेयमपि चार्णवे।।

अर्थात् मैं अपने पिता के आदेश से अग्नि में कूद सकता हूं, भयंकर विष खा सकता हूँ और सागर में छलाँग भी लगा सकता हूँ। मुझे पिताजी का आदेश तुरन्त बताओ।

आचार्य राजवीर शास्त्री

राजघराने में पले, जिसने कभी दुःख देखा ही नहीं था, उसका हिंसक जन्तुओं से व्याप्त, सुखसुविधाओं से सर्वथा रहित तथा तपस्वी भेष में १४ वर्ष तक वन में रहना यद्यपि बहुत ही कठोर कार्य था पुनरपि पिताजी की आज्ञापालन के सामने सब कष्टों को नगण्य समझकर श्रीराम ने पितृ-भक्ति का पालन किया। क्या आजकल के पुत्र अपने प्राचीन आदर्श को छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव वश पितृ-भक्ति से विमुख होकर श्रीराम के भक्त कहलाने के अधिकारी कहला सकते हैं?

श्रीराम की भ्रातृ-भक्ति भी पितृभक्ति के समान आदर्श तथा अनुकरणीय है।

शेष पृष्ठ 3 पर.....

विनय पीयूष

कवि! मेरा मन पावन कर दो!

आ पवस्थ मन्दितम
पवित्रं धारया कवे।
अर्कस्य योनि मासदम्।।

(ऋग्वेद 9/50/4)

कवि! मेरा मन पावन कर दो!
हे! रसधार
बहाने वाले,
हे! आनन्द
बढ़ाने वाले,
ज्योतिपुंज मैं भी हो जाऊँ,
ऐसा अपना तेज प्रखर दो!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

मोदी जी मुझे प्रिय हैं क्योंकि....

वे लीक से हटकर चलते हैं। एक बड़ी प्रसिद्ध लोकोक्ति है- 'लीक छाँड़ि तीनिहुँ चलैं, सायर-सिंह-सपूत।' मोदी जी भारत माँ के एक ऐसे ही सपूत हैं; जो लीक छोड़कर चलते हैं। यहाँ दो उदाहरणों की हम चर्चा करेंगे :

पहली बात तो यह है कि अब तक जितने भी प्रधानमंत्री हुए हैं; वे गाँधी जयन्ती पर राजघाट स्थित गाँधी जी की समाधि पर जाकर फूल चढ़ाते हैं। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि राजघाट बापू की मृत्यु का स्मारक है; जन्म का नहीं। जन्मदिवस पर मृत्यु के स्मारक पर पुष्पांजलि का क्या औचित्य? श्री नरेन्द्र मोदी, वह पहले प्रधानमंत्री हैं; जिन्होंने गाँधी-जयन्ती की शुरुआत 'रघुपति राघव राजा राम' के गायन से नहीं, अपितु बापू के सबसे प्रिय कार्यक्रम 'स्वच्छता अभियान' के शुभारम्भ द्वारा की। जब प्रधानमंत्री ने स्वयं अपने हाथों में झाड़ू लेकर सफाई करना शुरू कर दिया तो हजारों नर-नारी सफाई अभियान में जुट गये; यहाँ तक कि सुश्री स्मृति ईरानी और अभिनेत्री राखी सावंत के कमल कोमल करों में भी झाड़ू सुशोभित हुई। श्रेष्ठ कवि पं.सोहनलाल द्विवेदी की पंक्तियाँ सजीव हो उठीं-

चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि डग उसी ओर।
गड़ गई जिधर को एक दृष्टि, गड़ गये कोटि दृग उसी ओर।।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बकरीद पर्व पर प्रायः प्रधानमंत्री गण मुस्लिम समाज को बधाई शुभकामनाएँ देते रहे हैं। किसी ने यह नहीं सोचा कि बकरीद पर प्रधानमंत्री की बधाइयाँ मुस्लिम समाज को भले ही आह्लादित करती हों किन्तु वे कहीं न कहीं- गाँधीजी के मूलमंत्र- अहिंसा को अवश्य ही आघात पहुँचाती हैं। बकरीद पर बकरे इत्यादि निरीह प्राणी अल्लाह के नाम पर काटे जाते हैं। ये प्राणी भी खुदा की बेजुबान रियाया (प्रजा) हैं। ये कुछ बोल नहीं सकते किन्तु वें में अथवा मिमियाकर अपना दुखदर्द तो प्रकट ही करते हैं। इन्हें अगर एक सुई चुभो कर दिखा जाय तो ये तड़पने लगते हैं; फिर हजारों-लाखों की तादाद में इनका काटा जाना- अहिंसा की मूल भावना के अनुरूप कैसे कहा जा सकता है! इस संबन्ध में काफी समय पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सचेत करते हुए कहा था- अपनी 'गोकरुणानिधि' में लिखा था-

'देखिये, जो पशु निःसार घास तृणपत्त फल फूल इत्यादि खावें और सार रूप दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, पुत्र-पुत्री मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें जहाँ बाँधे वहीं बँधे रहें, जिधर चलावे उधर चलें, जहाँ हटावें, वहाँ से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें, तो अपनी रक्षा के लिए पालन करने वाले के समीप दौड़ कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा।'

खेद की बात है कि हिन्दुओं में भगवान् के नाम पर पशुओं को मारने की प्रथा चल पड़ी। कोलकाता के प्रसिद्ध काली जी के मंदिर तथा कुछ अन्य स्थानों पर भी यह अत्याचार होता रहा किन्तु अनेक समाज सुधारकों तथा महापुरुषों के सदुपदेशों से इसकी रोकथाम संभव हो पाई। आटे का बकरा बनाकर उसकी बलि देकर लोग सन्तोष का अनुभव कर लेते हैं। इस तरह के मध्यवर्ती मार्ग अन्य मतों मजहबों के लोग भी निकालकर इन निरीह प्राणियों की रक्षा कर सकते हैं।

एक जाने माने नेता ने मोदी जी पर यह आरोप लगाया है कि उन्होंने बकरीद पर मुस्लिम समाज को बधाई या शुभकामना नहीं दी। यदि यह सही है तो मोदी जी वास्तव में बधाई के पात्र हैं। क्योंकि केवल भारत की नर-नारियों तक ही प्रधानमंत्री का कार्यक्षेत्र नहीं है; उनके कार्यक्षेत्र में पेड़ पौधे खेत खलिहान पशु पक्षी सभी आते हैं। जिस पर्व से पशु समाज को इतने बड़े पैमाने पर क्षति पहुँचती हो, कष्ट पहुँचता हो और प्रधानमंत्री बधाई दे- यह कहाँ तक उचित है!

अच्छी बात यह है कि आज मुस्लिम समाज में भी कई लोग ऐसे हैं- जो कुर्बानी के इस रूप को बहुत अच्छा नहीं मानते। दिनांक ०६.१०.१४ के 'दैनिक जागरण' ने बकरीद पर 'लीजिए मुगलई व्यंजनों का स्वाद' शीर्षक लेख में कई मुस्लिम महिलाओं के विचार प्रकाशित किये हैं; जिनमें गृहिणी शगुफ्ता आज़मी ने कहा है- 'बकरीद पर किसी भी जानवर की कुर्बानी देना हर किसी के लिए अनिवार्य नहीं है। यह तो इंसान की हैसियत के मुताबिक दी जाती है।' ब्यूटीशियन शायला हसन ने कहा है-'आज भी जब हम बकरा, दुम्बा या फिर किसी और जानवर की बकरीद पर कुर्बानी देते हैं तो थोड़ा दुःख तो होता ही क्योंकि उससे लगाव हो जाता है।'

सुश्री शायला हसन की तरह अन्य महिलाओं या पुरुषों का इस खुदा की बेजुबान रियाया के प्रति लगाव इंसानियत की वह पूँजी है, जिसे आज सुरक्षित रखने की ही नहीं; वरन् उसकी वृद्धि की आवश्यकता है-

खुदा करीम है, बंदे करीम क्यों न बनें।
खुदा रहीम है, बंदे रहीम क्यों न बनें।

अब अगर महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र को आपने गौर से देखा होगा, तो आपको बापू के बकरी प्रेम की भी झलक मिली होगी। वे नित्य स्वयं बकरी की सेवा करते थे और यहाँ तक कि जहाँ महीं जाते थे, उनके साथ बकरी भी जाती थी। महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की बापू संबन्धी कविता की निम्नांकित पंक्तियाँ क्या कुछ कह रही हैं-

सारे सम्बल के तीन खंड, दो बसन एक टूटी लकरी
सारी सेनाओं की प्रतीक, पीछे चलने वाली बकरी।

क्या बापू का यह बकरी प्रेम अकारण था? निश्चय ही इस बकरी या पशु प्रेम के माध्यम से यह संदेश देना चाहते थे कि बकरी-बकरे इत्यादि पशुओं को प्राण रक्षा का अधिकार है; वह उन्हें मिलना चाहिए और 'अशरफुलमखलूकात' कहलाने वाली मनुष्य जाति को इनकी रक्षा करके अल्लाह ताला का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१५२

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

ईश्वर और पाप क्षमा

(प्रश्न) ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा करता है वा नहीं?

(उत्तर) नहीं। क्योंकि जो पाप क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय और सब मनुष्य महापापी हो जायें। क्योंकि क्षमा की बात सुन ही के उनको पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा अपराधियों के अपराध क्षमा कर दे तो वे उत्साहपूर्वक अधिक अधिक बड़े बड़े अपराध करें। क्योंकि राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उनको भी भरोसा हो जाय कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे और जो अपराध नहीं करते वे भी अपराध करने से न डर कर पाप करने में प्रवृत्त हो जायेंगे। इसलिये सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है क्षमा करना नहीं।

(प्रश्न) जीव स्वतन्त्र है वा परतन्त्र?

(उत्तर) अपने कर्त्तव्य कार्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है। 'स्वतंत्रः कर्त्ता' यह पाणिनीय व्याकरण का सूत्र है। जो स्वतन्त्र अर्थात् स्वाधीन है वही कर्त्ता है।

(प्रश्न) स्वतन्त्र किसको कहते हैं?

(उत्तर) जिसके आधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तःकरणादि हों। जो स्वतंत्र न हो तो उसको पाप पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा भृत्य, स्वामी और सेना, सेनाध्यक्ष की आज्ञा अथवा प्रेरणा से युद्ध में अनेक पुरुषों को मारके अपराधी नहीं होते, वैसे परमेश्वर की प्रेरणा और आधीनता से काम सिद्ध हों तो जीव

को पाप वा पुण्य न लगे। उस फल का भागी प्रेरक परमेश्वर होवे। नरक स्वर्ग अर्थात् सुख दुःख की प्राप्ति भी परमेश्वर को होवे। जैसे किसी मनुष्य ने शस्त्र विशेषसे किसी को मार डाला तो वही मारने वाला पकड़ा जाता है और वहीं दंड पाता है, शस्त्र नहीं। वैसे ही पराधीन जीव पाप पुण्य का भागी नहीं हो सकता। इसलिये अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में जीव स्वतंत्र परन्तु जब वह पाप कर चुकता है तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है। इसलिये कर्म करने से जीव स्वतंत्र और पाप के दुःख रूप फल भोगने में परतन्त्र होता है।

(प्रश्न) जो परमेश्वर जीव को न बनाता और सामर्थ्य न देता तो जीव कुछ भी न कर सकता! इसलिए परमेश्वर की प्रेरणा से ही जीव कर्म करता है।

(उत्तर) जीव उत्पन्न कभी न हुआ, अनादि है। जैसा ईश्वर और जगत् का उपादान कारण नित्य है। और जीव का शरीर तथा इन्द्रियों के गोलक परमेश्वर के बनाये हुए हैं परन्तु वे सब जीव के आधीन हैं। जो कोई मन, कर्म, वचन से पाप पुण्य करता है वहीं भोक्ता है ईश्वर नहीं।

जैसे किसी कारीगर ने पहाड़ से लोहा निकाला, उस लोहे को किसी व्यापारी ने लिया, उसकी दुकान से लोहार ने ले तलवार बनाई, उससे किसी सिपाही ने तलवार ले ली, फिर उससे किसी को मार डाला। अब यहां जैसे वह लोहे को उत्पन्न करने, उससे लेने, तलवार बनाने वाले और तलवार को पकड़ कर राजा दंड नहीं देता किन्तु जिसने तलवार से मारा वही दंड पाता है। इसी प्रकार शरीरादि की उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर उसके कर्मों का भोक्ता नहीं होता, किन्तु जीव को भुगाने वाला होता है। (क्रमशः)

वेदांजलि

ईश्वरीय ज्ञान वेद और उसका स्वरूप

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः।।
–ऋ. 9/97/34

शब्दार्थ–

(वह्निः) ईश्वर से प्राप्त ज्ञान का वाहक ऋषि **(तिस्रः वाचः)** तीन प्रकार की ऋक्, यजु और साम लक्षणयुक्त वाणियों को **(ऋतस्य धीतिम्)** सत्य की धारणा और **(ब्राह्मण मनीषाम्)** परमात्मा की सत्य-प्रज्ञा को **(प्र ईरयति)** लोक में प्रचारित करता है, इसलिए **(गावः)** वेद-वाणियाँ **(गोपतिं पृच्छमानाः)** वाणीपति परमात्मा से पूछती हुई-सी **(यन्ति)** बाहर जाती हैं, अर्थात् ज्यों की त्यों प्रकाशित होती हैं तथा **(मतयः)** वेदवाही ऋषियों की बुद्धियाँ **(वावशानाः)** वेद-प्रतिपादित पदार्थों की कामना करती हुई **(सोमम्)** सोमादि पदार्थों को **(यन्ति)** प्राप्त होती हैं।

व्याख्या–

इस मंत्र में चार बातें कही गई हैं- (1) सृष्टि के आदि में दयालु प्रभु ने अपने ज्ञान को ऋषियों के हृदय में दिया। (2) वह वेद-वाणी तीन प्रकार की है। (3) वे वाणियाँ (ज्ञान) ज्यों-की-त्यों मनुष्यों तक ऋषियों द्वारा पहुँचीं। ऋषियों ने अपनी ओर से उनमें कुछ भी परिवर्तन परिवर्धन नहीं किया। (4) सांसारिक पदार्थों का नाकरण भी वेद के आधार पर किया। अब क्रमशः एक-एक बात पर विचार कीजिये-

मनुष्य की अपनी कोई भाषा नहीं, अपना कोई ज्ञान नहीं। वह जहाँ उत्पन्न होता है, उसके माता-पिता और परिवार वाले जिस भाषा को बोलते हैं, उसी भाषा के शब्द उसके कानों से टकराते रहते हैं। धीर-धीरे उनके संस्कार हमारे मस्तिष्क पर जमते रहते हैं और हमारी जिह्वा सुनी हुई ध्वनियों का अनुकरण करके उस भाषा का प्रयोग करने लगती है। उत्पन्न होते ही किसी अंग्रेजी बालक को भारतीय परिवार में रख दिया जाय तो वह भारतीय भाषा बोलने लगेगा। इसी प्रकार उसका रहन-सहन और खान पान भी भारतीयों जैसा होगा। ठीक यही अवस्था भारतीय बालक की अंग्रेज परिवार में होगी। यद्यपि सामान्य व्यक्ति को यह बात बड़ी विचित्र सी लगती है कि पशु पक्षियों की और दूसरे प्राणियों की, सभी की उनकी कामचलाऊ बोलियाँ अथवा ध्वनियाँ हैं, किन्तु मनुष्य की नहीं। जो बालक गूँगे होते हैं, उनके न बोलने का कारण यह होता है कि वे बहरे होते हैं। कान द्वारा किसी ध्वनि को ग्रहण न कर सकने के कारण उनका जिह्वा द्वारा अनुकरण भी नहीं हो पाता, अतएव वे गूँगे होते हैं।

पशु और पक्षियों को जितने ज्ञान की आवश्यकता है, वह जन्म के साथ ही उन्हें प्राप्त हो जाता है, किन्तु उस ज्ञान का विकास वे नहीं कर सकते। वे कोई क्लास लगाकर अपना ज्ञान दूसरों में संक्रान्त नहीं कर सकते। मनुष्य की स्थिति इससे भिन्न है। वह दूसरों से ग्रहण करके ज्ञान की पूँजी अर्जित करता है और उस पर मनन करके उसका विकास भी करता है, अतः प्रत्येक दृष्टि से मनुष्य को ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है।

प्रकृति की पुस्तक को अपनी बौद्धिक प्रतिभा से पढ़ने वाली बात भी युक्ति संगत नहीं हैं, क्योंकि पुस्तक से ज्ञान प्राप्त करने के लिए पढ़ना अनिवार्य है। कोई अपठित व्यक्ति पुस्तक से ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। ठीक यही स्थिति प्रकृति की है। ज्ञानी ही उसके रहस्यों को समझकर उससे लाभ उठा सकता है। वृक्षों और जड़ी-बूटियों को देखकर एक सामान्य व्यक्ति उन्हें सुन्दर और हरा भरा तो बात देगा, किन्तु वे प्राणि जगत् के लिए किस-किस रूप में उपयोगी हैं, यह उस विषय का विद्वान् ही बता सकता है। उदाहरण के लिए एक नीम का वृक्ष है। उसके पत्ते, उसकी छाल, जड़, फूल, फल और तेल क्या क्या काम आते हैं, एक वैद्य ही जानता है, क्योंकि उसने उस विषय के ग्रन्थ पढ़े हैं, अतः प्रकृति मनुष्य का पथ प्रदर्शन नहीं कर सकती। इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक 'सिसरो' के शब्द बड़े सबल और प्रभावोत्पादक हैं-

"Nature has given us small sparks of knowledge which we quickly corrupt and extinguish by our immoralities, fault, and errors, so that the light of nature nowhere appears in its brightness and purity." -*Cicero*

'प्रकृति से हमें ज्ञान के केवल छोटे छोटे दीपक मिले हैं, पर उन्हें भी हम अपने दुराचारों, दोषों और भूलों से बुझा देते हैं। सार यह है कि प्रकृति का प्रकाश अपनी पवित्रता और दीप्ति में कहीं भी प्रकट नहीं होता।'

इस उहापोह से सिद्ध हुआ कि ईश्वरीय ज्ञान के बिना मनुष्य सभ्य नहीं बन सकता। इसलिए दयालु प्रभु ने अपना ज्ञान मनुष्य के कल्याण के लिए चार ऋषियों के हृदय में दिया।

मंत्र की दूसरी बात है कि वेद हैं तो चार, किन्तु चारों वेदों के मंत्र तीन प्रकार के ऋक्, यजुः और साम रूप में हैं।

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७५

प्रवाहस्ते वाण्याः कथयति रहस्यं श्रुतिगतं
न निष्ठामात्रं वा भवति न च पूजार्चनविधिः।
तव ज्ञानं श्रेष्ठं नुदति सततं कर्मणि जनं
त्यजन्रुद्धं मार्ग त्वनुसरति लोको नवपथम्।।

तेरी वाणी का प्रवाह
वेदों में निहित रहस्यों को
उजागर करता है !
वह न तो केवल श्रद्धामात्र है
और
न केवल पूजा पाठ की विधि भर है।
तेरे ज्ञान की श्रेष्ठता केवल
इसी में निहित है कि वह मानव को
कर्म में प्रवृत्त करता है ! !
कर्मशील व्यक्ति ही
अवरुद्ध मार्ग का परित्याग करके
नवीन पथ का अनुयायी
हो जाता है।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप'

-डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक'

आर्य समाज आदर्शनगर, लखनऊ के मन्त्री श्री सतीश निझावन की पत्नी श्रीमती ऊर्मिला निझावन का देहावसान २८.०३.२०१४ को हो गया था। उनकी स्मृति में 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' नाम से स्मारिका प्रकाशित की गई, जो अनेक दृष्टियों से उत्कृष्ट है।

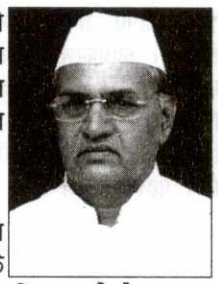

पारिवारिक परिचय

श्री सतीश निझावन ने अपने परिवार का परिचय उदात्त भाव से दिया है। उनके प्रेम में श्रद्धा और स्नेह के एक साथ दर्शन होते हैं। उनके पिता डॉ.राम जी दास निझावन से मेरा अच्छा परिचय था। मैं १९८०-८८ की अवधि में प्रातः को प्रति सप्ताह और सायं को लगभग प्रतिदिन आर्य समाज आदर्शनगर के सत्संग में जाया करता था। वहाँ डॉ. निझावन जी प्रतिदिन आते थे और भजन गया करते थे।

इसी अवधि में श्री वेदपाल जी निझावन आर्य समाज शृंगारनगर, लखनऊ के मन्त्री रहे। वे भजन गाने में प्रवीण थे और मन्त्री पद पर सर्वाधिक लोकप्रिय रहे। वर्ष १९८८ में वे सेवानिवृत्त हुए, अगने निर्वाचन मे मन्त्रि-पद का भार मुझे सौंपा और तत्पश्चात् दिल्ली चले गये। अनेक वर्षों तक उनसे मेरा पत्राचार होता रहा।

पत्नी का समुचित आभार

हमारे समाज में पत्नी के सहयोग को पति-लोग विशेष योगदान के रूप में नहीं लेते, उसकी प्रशंसा भी कम ही करते हैं और सार्वजनिक आभार तो कदापि नहीं जताते। इन गृहिणियों में कुछ ऐसी भी रत्न-मणियाँ होती हैं जो अनेक जीवनों को सज्जीवन बनाती हैं। इनका श्रेय भी पुरुष-वर्ग ले लेता है। परन्तु श्री सतीश निझावन ने न्याय का आचरण किया। उन्होंने श्रद्धांजलि-सभा में श्रद्धांजलि दी, परिश्रम करके स्मारिका छपवायी और उसमें भी सार्वजनिक रूप से पत्नी का समुचित आभार व्यक्त किया है।

भावभीनी श्रद्धांजलियाँ

स्मारिका में पुत्री, नातिन, पुत्र, पुत्रवधू तथा उपकृत परिवारिजनों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलियाँ दी गई हैं। इन भावांजलियों में शब्द कम होते हैं किन्तु भाव गम्भीर होते हैं और इन्हीं से कोई स्मारिका वास्तविक स्मारिका बनती है। प्रभु इन सब श्रद्धांलियों को सार्थक बनाए।

आत्म-कल्याण के सूत्र

स्मारिका पारिवारिक साहित्य तक सीमित नहीं है। इसमें आत्म-कल्याण के सूत्र भी अनुस्यूत हैं। मन, इन्द्रियों और आत्मा के स्वरूप को जानकर ही मनुष्य आत्म-कल्याण कर सकता है। बन्धन और मोक्ष को न समझकर आज का मनुष्य शुष्कमना हो गया है। स्मारिका में इन ग्रन्थियों को खोला गया है। उपासक का ज्ञान कम हो या अधिक, ईश्वर का भजन उसकी भक्ति को सुदृढ़ करता है। स्मारिका का यह भाग चन्दन की शीतलता के समान है।

उत्तम सम्पादन

स्मारिका का सम्पादन 'आर्य्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश जी आर्य ने किया है। किसी पुस्तक या पत्रिका को पठनीय रूप में प्रस्तुत करना एक कठिन कार्य है। इसमें अपेक्षित दर्जनों तत्त्वों में से एक का भी सामंजस्य छूट जाए तो सम्पादन सार्थक नहीं होता। सम्पादक का नाम एक इंच में आता है किन्तु उसका काम इंच-इंच में प्रस्तुत रहता है। डॉ.वेद प्रकाश जी आर्य ने स्मारिका का उत्तम सम्पादन किया है। इसके लिए वे विद्वानों की सराहना और साधुवाद के पात्र हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

श्रीराम के भक्तों.....

संसार में पैतृक संपदा पर भाई-भाई में प्रायः झगड़े होते रहते हैं और राज्य सत्ता के लिए तो भाई-भाई में खूनी क्रान्तियाँ हुई हैं। परन्तु श्रीराम के जीवन में राज्य सत्ता तुच्छ है, और भ्रातृस्नेह सर्वोपरि है, इसकी कारण मन्थरा के कहकाने पर माता कैकेयी ने जो राजघराने में राजविद्रोह की बीज बोये थे, उनके दूरगामी दुष्परिणामों को दूर करने में श्रीराम को भ्रातृस्नेह के कारण ही सफलता मिली थी। वेद में 'स नो बन्धुः' कहकर परमेश्वर को भी भ्राता के समान ही सुखदायक माना है, किन्तु वर्तमान के भाई भाई के कलह को देखकर तो वैदिक उपमा भी व्यर्थ दिखाई देती है। श्रीराम ने वैदिक आदर्श को 'मा भ्राता भ्रातरं दिक्षन्' (अथर्ववेद) जीवन में क्रियान्वित करके ही भ्रातृस्नेह को कठोर परीक्षा की घड़ी में भी नहीं छोड़ा। इसीलिए यह प्रसिद्ध है कि राम भरत ने चक्रवर्ती राज्य को भी ठोकर मार कर भ्रातृस्नेह में लेशमात्र भी बाधा नहीं आने दी।

यद्यपि सूर्यवंशी राजाओं की ही यह परम्परा रही थी कि 'प्राण जायें, पर वचन न जाहि।' राजा हरिश्चन्द्र को अपने वचनों का पालन करने के लिए ही राज पाट छोड़कर चण्डाल के घर नौकरी करनी पड़ी थी। श्रीराम ने भी अपने जीवन में सदा ही वचनों का पालन बड़ी दृढ़ता से किया। भाई भरत के अनेक गुरुजनों व ऋषियों को साथ लेकर श्रीराम के वापिस लाने के लिए चित्रकूट में जाने पर श्रीराम ने जो उन्हें उत्तर दिया है वह संसार के इतिहास में अद्वितीय है। श्रीराम कहते हैं- 'चाहे लक्ष्मी चन्द्र का, हिम हिमालय का और समुद्र अपनी सीमाओं का परित्याग कर देवे, परन्तु मैंने जो अपने पिता जी के सामने प्रतिज्ञा की है, उसको नहीं छोड़ सकता। मैं अपने प्राणों को, भाईयों तथा पत्नी को छोड़ सकता हूँ किन्तु जो प्रतिज्ञा की है उसको नहीं छोड़ सकता।' परन्तु आज उसी राम के वंशजों की स्थिति विपरीत ही है, पिता-पुत्र का, भाई-भाई का, पुत्र-माता का, भाई-बहन का तथा छोटे बड़े का परस्पर विश्वास समाप्त प्राय है किसी के वचनों का किसी को विश्वास ही नहीं है। इसीलिए लिखित प्रमाण पत्रों पर साक्षी करवा कर भी वचनों से मुकर जाते हैं और अविश्वास के कारण ही घर-घर में प्रत्येक सदस्य का अपना-अपना अलग-अलग ताला भी लगा रहता है पुनरपि घर में मूल्यवान् वस्तु न रखकर बैंकों के लाकरों में जा पहुँचे हैं। पुनरपि अविश्वास जन्यदुःख दावानल से सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची हुई है।

संसार में दुर्बलों के सहायक बहुत कम मिलते हैं। दुर्बलता तो मानो मानवता के लिए अभिशाप है। 'देवो दुर्बलघातकः' के अनुसार निर्बल व्यक्ति की प्रकृति भी सहायता नहीं करती। 'वीर भोग्या वसुन्धरा' के अनुसार समस्त संसार के भौतिक सुखों का भी भोग निर्बल व्यक्ति कभी नहीं कर सकते। क्षत्रिय कुलावतंस श्रीराम ने शारीरिक शक्ति तथा शस्त्रास्त्रों की विद्या में निपुण होकर ही आसुरीवृत्ति वाले असुरों का संहार किया था। श्रीराम ने पूर्ण ब्रह्मचर्यादि सद्व्रतों का पालन करके शरीर को ऐसा सुदृढ़ एवं बलवान् बनाया था कि उनके समान वीरता, धनुषधारी, विशालवक्षस्थलादि गुणों वाला इस भूलोक में कोई नहीं था। श्रीराम ने उस समय के महान् वैज्ञानिक महर्षि विश्वामित्र से शस्त्रास्त्रों का प्रशिक्षण लिया था। श्रीराम क्षात्रधर्म की रक्षा के लिए वीर, पराक्रमादि से सम्पन्न होकर शास्त्रास्त्रविद्या में भी निपुण थे। और आज उनके भक्तों की क्या और कैसी दयनीय दशा है? इसका वर्णन करते हुए भी अतीव खेद होता है। भौतिक सुखों के प्रति आसक्ति ने समस्त वैदिक मर्यादाओं को ध्वस्त कर दिया है। बालविवाह, सहशिक्षा, अनमेल विवाह तथा फिल्मी नाच गानों से आज राम भक्तों को शारीरिक बल से खोखला एवं अस्थि पिंजर ही बना दिया है। युवावस्था से पूर्व ही बूढ़े दिखाई देने लगे हैं। शस्त्रास्त्रों के प्रशिक्षण की बात तो बहुत दूर, घरों में लाठी, डण्डों का भी अभाव हो गया है और पौष्टिक आहार न मिलने तथा मांस-मदिरादि कामोत्तेजक पदार्थों का आहार बढ़ने से राम के वंशजों की जो दुर्दशा हो रही है, उसकी क्या कथा कहें, इन्हें कहीं मुसलमान, कहीं ईसाई और कहीं अपने ही भाई मार-काट रहे हैं और ये बेचारे चित्र के पुजारी 'राम-राम' की रटन्त करते हुए 'मरा-मरा' ही कहने लगे हैं। क्या वीर राम के भक्तों की यह कायरता उनके चरित्र की पूजा न करने से ही नहीं है? *('मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम' से)*

मेरा निवेदन

३१ मार्च, २०१४ को हुई श्रद्धांजलि-सभा में मैंने भी श्रीमती ऊर्मिला निझावन को भावांजलि अर्पित की थी। आज सतीश जी की ओर से मैं निम्न शब्द अर्पित कर रहा हूँ-

जाने वाले के साथ जाते हैं, अपने
भी वो हज़ार अफसाने।
जिनके बिन ये जहाँ होता, हम मगर
हम नहीं होते।।

(सम्प्रति पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार में)

(पृष्ठ 2 का शेष.....)

ईश्वरीय ज्ञान.....

इसलिए चार वेद होते हुए भी तीन वेद कहलाते हैं। जैसा कि कहा गया है- **'तद् यत्तत् सत्यं त्रयी सा विद्या'** (शतपथ, 9/5/1/19) अर्थात् 'जो कुछ सत्य है, वही त्रयी विद्या (चार वेद) है।'

मंत्र की तीसरी बात है कि प्रभु की वाणी प्राप्त तो हुई ऋषियों के द्वारा, किन्तु है वह विशुद्ध; ऋषियों ने अपनी ओर से उसमें कुछ नहीं मिलाया। क्योंकि मूलरूप में मनुष्य का अपना कोई ज्ञान है ही नहीं, अतः यह ठीक ही है कि ऋषियों ने अपनी ओर से उसमें कुछ नहीं जोड़ा।

मन्त्र की चौथी बात है कि सांसारिक पदार्थों के नाम भी ऋषियों ने वेदों से शब्द ले-लेकर रक्खे। वेद में शरी की नाड़ियों का वर्णन करते हुए **'इमं मे गंगे यमुने सरस्वती'** आदि शब्द ऋषियों को मिले। ऋषियों ने देखा जिस प्रकार ये नाड़ियाँ रक्त बहाकर शरीर की पुष्टि और रक्षा करती हैं, उसी प्रकार प्रथिवी पर बहनेवाली नदियाँ भी पानी बहाकर प्रदेशों को सींचकर अनेक प्रकार की ओषधियाँ, फल और अन्नादि उत्पन्न करती हैं। इन गुणों की समानता को देखकर उन्होंने नदियों का नाम- गंगा, यमुना और सरस्वती आदि रख दिया। संसार में बिना नाम की कोई वस्तु नहीं है और वे सारे नाम ऋषियों ने वेद के शब्दों से रक्खे। जैसा कि मनु ने भी कहा है-

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेद-शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।।

-मनु.1/21

'पशु, पक्षी आदि सब जीवों के नाम कथा कर्म पृथक्-पृथक् वेदों के शब्दों के अनुकूल रक्खे गए और भिन्न-भिन्न संस्थाएँ वेदानुसार बनाईं।'

व्यक्तियों के नाम भी इसी प्रकार रक्खे गए। वेद में विश्वामित्र शब्द सर्वप्रिय के अर्थ में आया। इस भाव को स्वीकृत करके लोग में व्यक्तियों के नाम भी वैसे रख दिए गए। कुछ लोग प्रचलित व्यक्तियों के नाम देखकर इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि वेद में इतिहास है। वस्तुतः वेद का ऐतिहासिक व्यक्तियों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। *('भ्रुति सौरभ' से साभार)*

'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' : सम्मतियाँ

'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' के संबन्ध में मेरे विचार से यह एक बहुत ही सुन्दर आध्यात्मिक पुस्तक है जिसमें प्रत्येक मणिदीप को सरल भाषा में समझाने का सफल प्रयास किया गया है। जिससे हमारे मंत्री (श्री सतीश निझावन) जी की कड़ी मेहनत तथा उनकी योग्यता प्रदर्शित होती है। जिसमें आपने अपने विषयों को मणियों में पिरोया है। आपके द्वारा लिखे गये भजनों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि भजनों की प्रत्येक कड़ी ईश्वर के नये अंदाज से जुड़ी है। अतः सतीश निझावन जी बधाई के पात्र हैं। आशा है कि आर्यजन इस पुस्तक से अवश्य लाभान्वित होंगे और उनका किया गया पुरुषार्थ सफल होगा। ईश्वर आपको शक्ति दे कि आप और अधिक आध्यात्मिक ऊँचाई को छुयें ऐसी मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

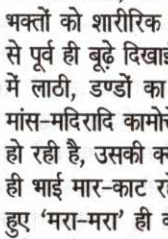

-आत्म प्रकाश बत्रा, उपप्रधान आर्यसमाज, आदर्शनगर, लखनऊ

***

'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' पुस्तक श्री सतीश निझावन जी द्वारा अपनी पत्नी की स्मृति में समर्पित है जो आर्य समाज आदर्शनगर लखनऊ के श्रावणी उपाकर्म उत्सव पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन आदरणीय डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) के कर-कमलों से विमोचित की गयी है। इस पुस्तक को पढ़कर हृदय भाव-विभोर हो गया। पुस्तक का विन्यास व संयोजन बहुत ही सुन्दर और क्रमबद्ध ढंग से किया गया है।

सर्वप्रथम स्मृतिशेष श्रीमती ऊर्मिला जी के परिवार-जनों के द्वारा अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई है। उनक नातिन 'हनी' द्वारा बहुत ही मार्मिक शब्दों में हृदय के उद्गार व्यक्त किये गये हैं जो सीधे हृदय को छू जाते हैं। दूसरे खण्ड में आध्यात्मिक लेख हैं। इसमें 'यज्ञ' नामक सातवें मणिदीप में देव और याज्ञक का अन्तर बहुत ही सरल और सहज भाषा में विवेचित किया है। 'कर्म' नामक दसवें मणिदीप में कर्म कितने प्रकार के हैं? नित्य-कर्म क्या हैं? नैमित्तिक और काम्य कर्म का विवरण, बहुत ही स्पष्ट रूप से समझाया गया है। तत्पश्चात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की बहुत ही सुन्दर विवेचना एक साथ क्रम से पढ़कर सरलता से समझ में आ जाती है। अन्तिम खंड में श्री सतीश जी ने स्वरचित, सारगर्भित एवं प्रभु समर्पित भजनों का संग्रह किया है।

इस पुस्तक को पढ़कर मैं गद्गद् हो गया। अपने प्रिय को श्रद्धांजलि देने का सुन्दरतम व अनुपम माध्यम है यह मणिदीप। इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं सतीश निझावन जी। *-अम्बरीश कुमार अग्रवाल, प्रधान आर्यसमाज, आदर्शनगर*

***

thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' के सितम्बर, २०१४

अंक में मुखपृष्ठ पर साईं बाबा के सम्बन्ध में जो ज्वलंत प्रश्न उठाया गया है, वह वाजिब और सटीक भी है तथा समय की पुकार भी। आज शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी तथा साईं बाबा के भक्तों के मध्य गर्मागर्म बहस छिड़ी हुई है। हम सब जानते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, रहीम एवं समस्त लोकों का एकमात्र स्वामी है, वह जन्म अथवा अवतार नहीं लेता। इस्लाम धर्म भी यही कहता है। अतः साईं बाबा भगवान् कदापि नहीं हो सकते। मेरी जानकारी के अनुसार साईं बाबा ने स्वयं को कभी भगवान् कहा भी नहीं है। वह एक महापुरुष रहे होंगे। यहाँ यह भी प्रश्न उठता है कि क्या भगवान् और ईश्वर पर्यायवाची शब्द हैं? कदाचित् नहीं।

पं.शिवकुमार शास्त्री, आचार्य दीपंकर, आनन्द कुमार जी तथा आनन्द गिरि जी के आलेख पूर्ववत् ज्ञानवर्द्धक एवं असरदार हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत महेश चन्द्र द्विवेदी जी तथा डॉ.शम्भूनाथ सिंह के गीत विशेषरूपेण पसन्द आये। सम्पादकीय भी खूब है।

मंगलमय हो आपको, दीवाली त्यौहार।
दिन-दिन मिलते ही रहें, नवल नवल उपहार।।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-02, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सफलता की भविष्यवाणी 'आर्य लोक वार्ता' के सम्पादकीय में आ चुकी थी। पुनः नरेन्द्र मोदी द्वारा अपने समस्त सांसदों, मंत्रियों को चरण-स्पर्श के स्थान पर 'नमस्ते' करने का संदेश , इसके अतिरिक्त उन्हें अपने क्षेत्र में कार्य करने का निर्देश व एक गाँव को विकसित करना है जिससे हमारे देश का तेजी से विकास हो। ऐसे ही समय-समय पर वह स्वयं करते हैं- जैसे आफिस टाइम, उसपर नियंत्रण व व्यय आदि-यह वास्तव में प्रशंसनीय कदम है।

'नमस्ते' पर दो अंकों के सम्पादकीय

में पढ़ा जिसमें वेद, पुराण, गीता, रामायण सभी का संदर्भ व उनकी व्याख्या की गई है। दूसरे अंक में अनुभवों का उल्लेख किया गया है। बहुत खतरनाक लोग चरण स्पर्श के बहाने हानि पहुँचा सकते हैं, चिकोटी काटने का उल्लेख आदि। अतः स्पष्ट है कि नमस्ते अभिवादन का सुरक्षित माध्यम है, नमस्ते करिये काम पर जाइये।

अभिवादन के ढेर सारे ढंग हैं- जैसे राम-राम, सीताराम, राधेकृष्ण, सलाम, गुड मार्निंग आदि। नमस्ते से जो भाव निकलता है वह शायद किसी में नहीं है। मैं आपके आगे नतमस्तक हूँ(नमस्ते)।

-शिशिर कुमार श्रीवास्तव
सी-335/2, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का सितम्बर २०१४ अंक प्राप्त हुआ और इसे पढ़ने बैठ गया। सर्वप्रथम मेरी कविता को उत्तम शीर्षक देकर प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद। आपकी सदाशयता और प्रोत्साहन से मुझे प्रेरणा मिलती है। सम्पादकीय में जो प्रश्न उठाये गये हैं वे ज्वलन्त एवं विचारणीय हैं। मुझे लगता

है कि श्री नरेन्द्र मोदी राष्ट्रजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जिस दृढ़ता के साथ संकल्प बद्ध होकर कार्य कर रहे हैं उसके सुपरिणाम आने में कुछ समय तो अवश्य लगेगा लेकिन अच्छे दिन आने में संदेह नहीं है। श्री मदनमोहन जोशी कृत 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' का सन्देश एवं विश्लेषण नितान्त विद्वत्तापूर्ण एवं प्रेरक है। श्री विनम्र जी की शुभाकांक्षा पढ़कर हर बार नये ढंग से विचार व्यक्त करने की शैली देखने को मिलती है, समापन अक्सर काव्य की पंक्तियों से करते हैं जो आनन्ददायक और प्रेरक है। 'काव्यायन' में एक कविता को छोड़ शेष कविताओं ने दिल को छुआ है। डॉ.शम्भूनाथ सिंह की 'समय की शिला पर' कविता में काव्यसाधना एवं विद्वत्ता स्पष्ट परिलक्षित होती है। 'अपनी बात' में 'यं रक्षन्ति प्रचेतसो' पढ़कर सुकृत्यों और ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास और सुदृढ़ हुआ है। मेरी ओर से 'आर्य्य लोक वार्ता' परिवार और प्रेमी पाठकों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनायें।

-राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'
बी-2/356, से.-ए, जनकीपुरम, लखनऊ-21

***

'आर्य लोक वार्ता' सितम्बर अंक में

आपने मेरी कविता तथा मेरा पत्र प्रकाशित किया है, इसके लिए हृदय से आभारी हूँ। आपने साईं बाबा के बहाने निर्मल बाबा पर स्पष्ट विचार प्रकट किये हैं जो सर्वथा विचारणीय हैं। ज्वलंत प्रश्न यक्ष प्रश्न की भाँति महत्त्वपूर्ण है जिसमें चमत्कारी बाबा अल्प शिक्षित, अशिक्षित लोगों को ही नहीं, उच्च शिक्षित को भी अपने चंगुल में आसानी से फँसा लेते हैं। बाबाओं के धन्धों पर कोई रोक भी नहीं। नेता, व्यापारी, धनी परिवार सभी वहाँ धन देकर मत्था टेकते हैं। छल कपट की पूंजी से यह व्यवसाय सदैव फलता फूलता रहा है। 'राजा नंगा है' कौन कहे! आर्य संदेश में भगवान श्री कृष्ण के विषय में (वाचनालय से) प्रकाशित बिन्दुओं को कोरी गप्प कहना उचित नहीं है क्योंकि महापुरुषों से जुड़े आख्यानों का सत्य सहज समझ में नहीं आता। आस्था विश्वास पर चोट करने से लोगों का मन दुःखी होगा, सत्यता का बोध नहीं होगा। कुछ ऐसा ही सोच बौद्ध धर्म एवं दलित विमर्ष में भी व्याप्त है किन्तु बुराइयाँ स्वयं में ही खोजनी चाहिए, इतरों में नहीं। 'काव्यायन' में उमेश राही की कविता बेटियाँ, महेश चन्द्र द्विवेदी की 'मैं कविता हूँ' तथा कालजयी काव्य 'समय की शिला पर' बहुत पसंद आया। आर्य लोक वार्ता परिवार तथा कवियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

-सविता वाणी
गौरीगंज, अमेठी जनपद, उ.प्र.

***

आर्य लोक वार्ता सितम्बर अंक में कथित बाबाओं की खूब बखिया उधेड़ी है आपने। हमारे देश में स्वयंभू भगवानों की कभी कमी नहीं रही। अनकी तो बात ही छोड़ें जो सत्कार्यों हेतु मरणोपरान्त पूजे जाते हैं। विडम्बना यह है कि निर्मल बाबा, पायलट बाबा, टाट बाबा, बाल्टी

बाबा, बालयोगी, बलात्कारी बाबा आदि अवतरित कहाँ से हो जाते हैं जब ज्ञान विज्ञान मंगल तक पहुँच चुका है। निश्चित ही यह कर्म-विमुख और क्षण भर में चमत्कारों से श्री सम्पन्न होने के महत्वाकांक्षी जन की निर्बल मानसिकता का प्रतिफलन है। सद्पुरुषों के आदर्शों का अनुगमन बुद्धिमत्ता है किन्तु किसी के चित्र की पूजा करके बहुमूल्य समय नष्ट करने के अतिरिक्त कुछ नहीं। चाहिए तो यह भी कि इष्ट देवताओं के पूजा स्थलों को सीमित रखा जाए और उनमें क्रमशः वृद्धि न हो। सम्पादकीय में निधि श्रीवास्तव का कथन शतप्रतिशत सत्य है। पुत्र-पुत्री एक समान कहना तो सरल है, शिक्षा पालन पोषण विषय में कोई भेद भाव नहीं किन्तु जब पुत्री के लिए वरखोज होती है तो पुत्री के सद्गुणों से अधिक मूल्य दहेज का होता है। इस बिन्दु पर सुशिक्षित जन ही सर्वोपरि होते हैं। 'दहेज दानव' आदर्शों की भी बलि ले लेता है। समाज में सांस्कृतिक क्षरण दूषित मनोवृत्ति का कुपरिणाम है। 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' शाश्वत सारस्वत चिन्तन प्रदान कर रहे हैं जो जीवन यात्रा का पाथेय है। भावपूर्ण रचनाओं के लिए काव्य साधकों को साधुवाद। आलोक पर्व दीपावली से ओजस-तेजस शक्ति की मंगलकामना है, साथ ही महान समाज सुधारक वेदपुत्र महर्षि दयानन्द के परि निर्वाण पर हृदय से नमनांजलि-अर्पण की बेला का मौन मुखर स्वर-

दीप-पर्व पर, उर-अन्तर से, भव-भय-तमस भगाएँ।
दिवास्वप्न में मुग्ध आर्यजन, आओ! उन्हें जगाएँ।
दयानन्द-ऋषि ने तन त्यागा, आत्मादीप जलाया,
चलें वेद की ओर, लक्ष्य पर ध्यान 'विनम्र' लगाएँ।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिलनगर, विकास नगर, लखनऊ-22

***

मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि आज के इस पश्चिमीकृत समाज में धर्मराह पर अग्रसर नवोदितों को संस्कारित करने का कार्य 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा हो रहा है। इस हेतु आपको कोटिशः बधाई देता हूँ। ईश्वर से मेरी कामना है कि यह मासिक प्रपत्र निरन्तर प्रगति को चूमता रहे। आपके प्रयत्न का प्रशंसक-

-विजेन्द्र मिश्र 'दमदार'
बी-1/148, अस्सी नगवा, वाराणसी-221005

***

आर्य लोक वार्ता सितम्बर अंक के पृष्ठ आठ पर 'काल का अकरुण भृकुटि विलास' पढ़कर मन बहुत दुखित हुआ। ईश्वर हेमलता यादव की आत्मा को शांदि दे। ईश्वर की बड़ी कृपा जो आपके पुत्र श्री आलोक वीर बाल-बाल बचे, यह सब आपके शुभकर्मों का ही परिणाम था, आप सदा दूसरों का तन-मन-धन से भला चाहने वाले हैं। ऐसे लोगों के साथ ईश्वर सदा साथ रहता है, यह सत्य है। प्रथम पृष्ठ पर साईंबाबा की चर्चा है लेकिन कब तक रहेगी जब तक कि चमत्कारों से पर्दा नहीं उठता तभी तक अंधभक्त उन्हें भगवान की जगह मान कर सिर नवाजेंगे वर्ना जो सत्य है सामने आयेगा। सम्पादकीय में 'यदि मैं नरेन्द्र मोदी हूँ' एक अच्छा सुझाव है, जबतक ये लड़के और लड़कियाँ बिना दहेज के स्वयं का कदम नहीं उठाते कि यदि शादी करूंगा तो दहेज न लूंगा और न दूंगा तक। वेदांजलि में 'जैसा करोगे वैसा भरोगे' अत्यधिक शिक्षाप्रद मंत्र है और बहुजन सुखाय बहुजन

हिताय भी है अतः सबलोग सूझबूझ के साथ अपना व्यवहार और कार्य करेंगे हर बात को पहले उचित अनुचित विचार करेंगे फिर व्यवहार में वर्तेंगे। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' में ईश्वर अवतार लेता है या नहीं तो यह भी यजुर्वेद का मंत्र ही प्रमाणित करता है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति'। श्री पाल प्रवीण जी की २१ दिवसीय अमेरिका यात्रा के कुछ संस्मरण को पढ़कर पाठक आत्म विभोर अवश्य हो उठता है और इस प्रकार अपेन को भाग्यशाली समझता है। 'वाचनालय से' में अमृत खरे द्वारा जानकारी हासिल हुई कि स्वामी शंकराचार्य और स्वामी रूपानन्द जी ने साईंबाबा की पूजा का निषेध कर दिया। आनन्द कुमार जी का 'मनुष्य का विराट रूप' गुण रूपी संस्कारों से परिपूर्ण होता है। आनन्द गिरि जी की व्याख्यान माला 'अनन्त की खोज' बहुत ही उत्कृष्ट लेखमाला है। 'काव्यायन' की सभी कविताएँ अपना विशेष स्थान रखती हैं। रुद्रप्रकाश जी की कविता हिन्दी दिवस पर हिन्दी हिन्दुस्तान को गौरवान्वित और सुशोभित कर रही है। दूसरी उमेश राही की कविता 'बेटियाँ' विशेष महत्त्वपूर्ण है।

-श्रीमती प्रमोद कुमारी
एम.एस.37, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य्य लोक वार्ता का सितम्बर २०१४

का अंक यथासमय प्राप्त हो गया। बहुत ही ध्यान से पढ़ने वाला यह अंक है जिसे मैंने लगभग तीन-चार दिन में पूरा पढ़ा। किस पृष्ठ पर किस स्तम्भ से प्रभावित होकर कहाँ से अपने विचार प्रस्तुत करूँ- सभी कुछ प्रेरणा प्रदान करने वाली पठन सामग्री है- सदैव की भाँति।

पृष्ठ तीन पर श्री अमृत खरे जी की समीक्षा 'वाचनालय से' अनुपम है। उनके निर्भीक विचार हैं। 'शान्तिधर्मी' 'शान्ति प्रवाह', 'परोपकारी', 'जजमेण्ट आजतक', 'आर्य संदेश', 'राजस्थान पत्रिका' एवं 'नवभारत टाइम्स' व अन्य अनेकों पत्रिकाओं को स्वयं न पढ़ पाने का दुःख मुझे इसलिए नहीं है क्योंकि 'आर्य लोक वार्ता' के उक्त स्तम्भ से मुझे व अन्य पाठकों को लाभ मिला। साधुवाद। इं.जे.पी.अग्रवाल जी ने अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कमल अग्रवाल जी की जयन्ती पर जो कुछ लिखा है उससे मैं ही क्या सभी प्रभावित होंगे। हमारे निवास अलीगंज में तो यज्ञ सत्संग गोष्ठी में श्री व श्रीमती कमल अग्रवाल कई वर्ष पूर्व पधारे थे व अपने विचारों से सभी को अवगत कराया था। हम भी उनके निवास पर जा चुके हैं। पं.शिवकुमार शास्त्री जी की वेदमंत्र की व्याख्या 'वेदांजलि' स्तम्भ में प्रेरणा प्रदान करती है। 'मनुष्य का विराट रूप' व 'अनन्त की खोज' यदि पाठकगण नियमित रूप से नहीं पढ़ेंगे तो उन्हें अन्य लेखों, पत्रिकाओं, पुस्तकों से उतनी अधिक प्रेरणा नहीं मिलेगी। विभिन्न आर्य समाजों के वेद प्रचार के समाचार पढ़कर प्रसन्नता हुई। आपकी अपनी बात 'यं रक्षन्ति प्रचेतसो' पढ़कर कौन नहीं भावुक होगा? ईश्वर के सम्मुख हम नतमस्तक हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की प्रगति व विस्तार हेतु शुभाकांक्षा।

-पाल प्रवीण
एम.एस.120, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य समाज आदर्शनगर में श्रीकृष्ण

जन्माष्टमी के अवसर पर श्रावणी उपाकर्म महोत्सव में 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' नामक स्मारिका का विमोचन डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी (सम्पादक आर्य लोक वार्ता) के कर कामलों द्वारा किया गया।

(१) 'मणिदीप' स्मारिका श्री सतीश निझावन जी के हृदय की 'ऊर्मिला स्मृति' एवं उनके प्रति स्नेह और विछोह वेदना की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। साथ ही आर्य समाज के प्रति समर्पण और आर्य मान्यताओं की अभिव्यंजना है।

(२) 'मणिदीप' में वैदिक ज्ञान व ऋषि दयानन्द के निज-मन्तव्य एवं वैदिक मान्यताओं का एक सहज-सरल-स्पष्ट एवं संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण है जो संग्रहणीय व पठनीय है।

(३) पारिवारिक श्रद्धांजलियाँ, प्रेम व श्रद्धा की पुष्पांजलियाँ हैं जिनमें श्री निझावन दम्पति द्वारा संस्कारित संतान की एवं सान्निध्य प्राप्त पारिवारिक जनों की भावनाएं ओतप्रोत हैं। अनुभूत विछोह के दर्द को व पाये प्यार को, देखभाल एवं आतिथ्य की महक को बिखेरती हुई महसूस होती हैं ये श्रद्धांजलियाँ।

(४) मणिदीप में प्रस्तुत भजन 'ईश्वरीय अविनाशी ज्ञान सदा सदा रहेगा' ग्राह्य व कल्याणकारी है। भजन भी भक्ति भाव उत्पादक हैं।

(५) 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' स्मारिका के लिये श्री सतीश निझावन जी, मंत्री आर्य समाज आदर्शनगर एवं डॉ.वेद प्रकाश जी आर्य साधुवाद एवं बधाई के पात्र हैं।

-ध्यानेन्द्र मुनि
567/144, आनन्द नगर, जेल रोड, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' सितम्बर २०१४

अंक के माध्यम से श्री आलोक वीर आर्य के सकुशल बचने का समाचार पढ़कर अधिक प्रसन्नता हुई। 'जाको राखे....' की कहावत चरितार्थ होती है। श्रीमती हेमलता यादव के आकस्मिक दुःख से संतप्त पारिवारिक जनों को ईश्वर धैर्य प्रदान करें।

-राजकुमार शास्त्री
आर्य समाज, पारा रमनगरा, सीतापुर

***

आत्यावश्यक

(1) सहयोग राशि 'आर्य लोक वार्ता' के नाम से नकद/चेक/धनादेश द्वारा कार्यालय के पते-19/838, प्रथम तल, रिंग रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 पर भेजें।

(2) बैंक आफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद जमा करें तथा कार्यालय में सूचना दें। (विवरण पृ.8,कालम-5 पर अंकित है।)

(3) इसके अलावा सहयोग राशि नकद/चेक द्वारा इलाहाबाद बैंक की किसी भी शाखा में भी जमा कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

खाता धारक -आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता, बैंक-इलाहाबाद बैंक,
ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO 211122

thearyasamaj.org

धारावाहिक-(48)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

(छ) श्रद्धा-भक्ति :- श्रद्धा-भक्ति से मनुष्य के स्वभाव में नम्रता आती है, चरित्र मर्यादित होता है और पारस्परिक विश्वास दृढ़ होता है। यही विनय का मूल है। श्रद्धा-भक्ति-वश भगवान् की जो उपासना की जाती है, वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्वभाव को विनयी और सुसंयत बनाने का एक उपाय है। श्रद्धा-भक्ति से सबकी भावनायें एक दिव्य वस्तु में केन्द्रित हो जाती हैं और वे उपास्य के प्रति विनीत एवं कृता होकर एक प्रकार से अनुशासन की शिक्षा लेते हैं। देवताओं की प्रार्थना से एक बड़ा लाभ यही है कि स्वभाव की उच्छृंखलता और उद्दंडता मिट जाती है। यही बात पूज्य-जनों के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखने से होती है। इससे समाज में विनय, विनम्रता, सुशीलता की परम्परा चलती है। साथ ही, मनुष्य के चरित्र-निर्माण में वे बहुत सहायक होते हैं। शिष्ट होने के लिए वृद्ध-सेवा को इसीलिए विशेष महत्त्व दिया गया है। इससे ऊँट पहाड़ के नीचे आ जाता है।

(ज) धैर्य-शान्ति :- शील-विनय सम्पन्न पुरुष को धीर-गम्भीर और शान्त होना चाहिए। व्यासजी ने कहा है कि सत्पुरुष को उचित है कि संसार में सम्मान पाकर हर्षित न होवे और अपमान से खिन्न न हो। ऐसा करने से सज्जन सभ्य पुरुषों से पूजित होते हैं। दुष्टों में इस प्रकार के सज्जनों का आदर करने की साधुबुद्धि नहीं होती-

न मानमान्यो मुदमाददीत न सन्तापं
प्राप्नुयाच्चावमानात्।
सन्तः सतः पूजयन्तीह लोके नाऽसाधवः
साधुबुद्धिं लभन्ते।।
-आदिपर्व

महाभारत में ही पंडित के मुख्य लक्षण बताते हुए विदुर ने कहा है कि पंडित लोग किसी बात के तत्त्व को शीघ्र जान लेते हैं, फिर भी देर तक सुनते रहते हैं, किसी काम में रागद्वेष से प्रवृत्त नहीं होते, दूसरे के कार्य में बिना उसके कहे नहीं पड़ते-

क्षिप्रं विजानाति चिरं श्रृणोति,
विज्ञाय चार्थं भजते न कामात्।
नासंपृष्ठो ह्युपयुङ्क्ते परार्थे,
तत्प्रज्ञानं प्रथमं पंडितस्य।।
-उद्योगपर्व

इन बातों से धैर्य-शान्ति का महत्त्व एवं प्रयोजन समझा जा सकता है। वचन-व्यवहार में किसी भी प्रकार की चंचलता अभद्रता प्रकट करती है और उससे क्षोभ उत्पन्न होता है। बहुत से लोग छोटी-छोटी बातों से भी खीझकर बात का बतंगड़ बना लेते हैं और शिष्टता भूल जाते हैं। इससे उनकी आत्मतुच्छता और दुःशीलता प्रकट होती है।

(झ) व्यावहारिक सरसता:- शिष्ट समाज में व्यवहार की सरसता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। व्यावहारिक सरसता यह है कि मनुष्य वचन-कर्म से किसी प्रकार की कटुता न उत्पन्न करे। बातचीत में कर्कश शब्दों का व्यवहार अनुचित है। महाभारत में कहा है कि मर्मभेदी वचन मन का बुढ़ापा है-'वाक्शल्यं मनसो जरा।' मनुष्य को ज्वालामुख न बनकर सौम्य बनना चाहिए। निन्दा और आत्मप्रशंसा से दूर रहना चाहिए। व्यास के मत से विद्वान् को उचित है कि वह किसी की निन्दा न करे और न अपनी प्रशंसा का डंका पीटे- इन दो बातों को छोड़े बिना संसार में किसी गुणवान् की महिमा प्रकाशित होती नहीं देखी गई-

अब्रुवन् कस्यचिन्निन्दामात्मपूजामवर्णयन्।
न कश्चिद् गुणसम्पन्नः प्रकाशो भुवि दृश्यते।।
-वनपर्व

कौटिल्य का कहना है कि सभा में शत्रु की भी निन्दा न करे- 'संसदि शत्रुं न परिक्रोशेत्।' वाणी की तीक्ष्णता मित्र को भी शत्रु बना देती है। मीठे शब्दों में, मीठी हँसी से हृदय की मिठास व्यक्त होती है। शुभकामना शुभवचनों द्वारा व्यंजित होने पर अधिक प्रभावशालिनी हो जाती है।

बोलने में ही नहीं, लिखने में भी साधुता और सरसता का ध्यान रखना चाहिए। एक बार अमेरिका के प्रसिद्ध राष्ट्रपति स्वर्गीय अब्राहम लिंकन के सेक्रेटरी ने किसी के कठोर पत्र का उत्तर उससे भी कठोर शब्दों में लिंकन को लिखकर दिखाया। लिंकन ने उसे देखकर कहा-'अच्छा मुंहतोड़ जवाब है, लेकिन इसे भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है।' सेक्रेटरी ने कारण पूछा तो राष्ट्रपति ने कहा-'इस पत्र में तुमने अपने मन का क्रोध उतार ही लिया, जो कुछ भला-बुरा तुम कहना चाहते थे तुमने कह लिया- तुम्हारा काम हो गया, अब इसे भेजना व्यर्थ है, इस प्रकार के पत्र भेजने के लिए नहीं लिखे जाते।'

एक महापुरुष का यह उपदेश सबके लिए माननीय है। दूसरों के आक्षेप से अपने को स्वयं दूषित बना लेना मूर्खता है। कटुता को मधुरता से मिटाना चाहिए; कड़वी वस्तु का प्रभाव मीठी वस्तु के सेवन से स्वयं मिट जाता है।

पारस्परिक व्यवहार में सरसता उत्पन्न करने के अनेक उपाय हैं। एक तो यह है कि किसी भी काम में झुंझलाहट का आभास नहीं मिलना चाहिए। कौटिल्य ने मूर्ख का एक लक्षण यह लिखा है कि वह अवश्य दी जाने वाली वस्तु को भी बड़े झंझट से देता है- 'दातव्यमपि बालिशः परिक्लेशेन दास्यति।' नाक-भौं सिकोड़ना तमंचा चढ़ाने के बराबर है। जो भी करना है, उसे मृदुता के साथ ही करना चाहिए। उपेक्षापूर्ण व्यवहार के साथ तो मधुर शब्द और उपकार भी व्यर्थ प्रतीत होते हैं। बड़ों के साथ ही नहीं, छोटों के साथ, नौकरों और बच्चों के साथ विशेष रूप से नम्रता का व्यवहार करना चाहिए।

दूसरा उपाय यह है कि किसी बात के लिए हठ-दुराग्रह-पक्षपात न करके तथ्य को ग्रहण करना चाहिए। अपनी भूल का पता चलने पर तत्काल क्षमा-याचना करके अपना रास्ता बदल देना चाहिए। कौटिल्य का यह आदेश सर्वथा मान्य है कि विद्वानों की सम्मति का अतिक्रमण न करो-'सतां मतं नातिक्रमेत्।' बड़ों के बड़प्पन का ध्यान रखना चाहिए।

वचन-व्यवहार की सरलता व्यावहारिक जीवन को सरस और सफल बनाने में बहुत सहायक होती है। सरलता का अर्थ है सचाई। सत्य से अधिक सरल और क्या होगा! सत्य ही शिष्टों का धर्म है। मन-कर्म-वचन से सत्य का पालन करने से जीवन सरल और सरस रहता है।

सरलता से सीधेपन का भी बोध होता है। सज्जनों की बात, रहन-सहन सीधी-सादी होती है। वाग्व्यय, वचन-वक्रता, कुटिलता और छद्मसाधुता असज्जनों के लक्षण हैं।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (7)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

द्वितीय व्याख्यान

भारत दर्शन-2

पश्चिम ने सदा तर्काश्रित ज्ञान को प्रधानता दी है जबकि पूर्व ने अनुभूत ज्ञान को। सीधे सरल शब्दों में ऐसा कह सकते हैं कि पूर्व तार्किक परिभाषा या कानून की भाषा में आने वाले सत्य को महत्त्व प्रदान नहीं करता अपितु उस सत्य को स्वीकारता है जो जीवन अनुभूत है, जीवन में उतरा हुआ है। इसलिए इस राष्ट्र में पण्डितों से अधिक श्रेष्ठ उसको माना गया है जो यद्यपि विद्वान् नहीं थे किन्तु सत्य के द्रष्टा थे। सत्य के प्रयोक्ता थे। अस्तु दर्शन का अर्थ है भोगा हुआ, अनुभव में आया हुआ सत्य। भारत दर्शन अभिप्राय है ज्ञान की अनुभूत यथार्थता। मैं एक उदाहरण देना ठीक समझता हूँ जो मेरे अभिप्राय को और अधिक स्पष्ट कर सकेगा।

सिकन्दर सैन्य संगठन कर चुका था। भारत विजय के लिए प्रस्थान का समय समीप था। एक दिन अपने गुरु से उसने पूछा कि वह भारत से उनके लिए क्या लेकर आवे? गुरु कुछ क्षण मौन रहे। फिर कहा-'सिकन्दर तुम भारत से एक ज्ञानी पुरुष लेकर आना।' 'महाराज! ज्ञानी की पहिचान?' सिकन्दर ने पूछा। गुरु ने कहा-'अरे विश्वविजय करने वाले वीर, तुम ज्ञानी की पहिचान नहीं जानते?' सिकन्दर चुप हो गया। उसने भारत पर आक्रमण किया। आम्भीक ने देश की अर्गला उसके लिए खोल दी। वह पंजाब तक आ गया। युद्ध के पश्चात् शान्ति स्थापित होने पर उसने अपने सेनापति को ज्ञानी पुरुष तलाश कर लाने का आदेश दिया। सेनापति सैन्य संचालन और युद्ध कौशल में सिद्ध था। 'सम्राट ज्ञानी की पहिचान क्या है?' नम्रता से उसन पूछा। सिकन्दर अरस्तू का शिष्य था विद्वानों की संगति में रह चुका था। कुछ क्षण मौन रहा-फिर बोला-'मेरे एक प्रश्न का उत्तर मांगना।' जिसका उत्तर तुम्हें संतुष्ट कर दे उसे ज्ञानी समझना।' सेनापति सम्राट का प्रश्न लेकर चल दिया। नगर के बाहर एक छायादार वृक्ष की नीचे उसने एक तापस को बैठे देखा। सेनापति ने प्रणाम करके कहा-'श्रीमन्! मैं सम्राट के एक प्रश्न का आपसे उनके लिए उत्तर चाहता हूँ।' तापस ने अधखुली पलकें खोलीं- एक क्षण देखा और कहा-'जा भाग। जिनका प्रश्न है वह स्वयं आयेगा।' सिकन्दर ने वीर वेश में स्वयं जाकर अपना प्रश्न निवेदन किया। प्रश्न था-'स्वर्ग का मार्ग क्या है? और नर्क का मार्ग क्या है?' तापस ने वीर सिकन्दर, को देखा और पूछा-'तुम कौन हो?' 'मैं योद्धा हूँ, युद्ध जीवी। देख नहीं रहे हैं आप? यह शिरस्त्राण और कवच।' सिकन्दर ने वीरोचित दर्प से कहा।

'तुम-तुम योद्धा हो-' तापस ने आश्चर्य चकित होते हुए कहा-'तुम तो भिखारी से लगते हो।'

'अरे! कमर में यह क्या लटकाया हुआ है।' सिकन्दर के कमर से बंधी तलवार को तापस ने इंगित किया। सिकन्दर ने गर्व से गर्दन तानी और कहा-'नहीं जानते हो? यह वह तलवार है जिसने मकदुनियाँ से लेकर पंजाब तक अपना जौहर दिखलाया है। मानव रक्तपात किया है किन्तु अभी तक तृप्त नहीं हुई है।'

तापस सिकन्दर का उत्तर सुनकर अट्टहास कर उठा। 'अरे, यह भोंडा लोहे का टुकड़ा? और भिखमंगे क्या कहता है, तलवार है?' तापस ने सिकन्दर के अहम् पर चोट की। सिकन्दर तड़प उठा। उसका राजसी अहम् इस भाषा को सुनने का अभ्यस्त नहीं था। क्रोध से उसके नथुने फड़कने लगे। उसने क्रोध को पीना नहीं सीखा था। उसका हाथ तलवार की मूठ पर गया ही था कि तापस ने शान्त भाव से कहा-'वीर, यह नरक का मार्ग है।' सिकन्दर स्तंभित रह गया। तलवार म्यान में बन्द हो गयी। तापस ने कहा-'वीर, यह स्वर्ग का मार्ग है।' भारतीय प्रज्ञा के प्रखर तेज से वह अभिभूत हो गया। उसने तलवार तापस के चरणों में रख दी और मस्तक झुका दिया। तापस की गम्भीर गिरा ने कहा-'सिकन्दर! यह मोक्ष का मार्ग है।'

(करतल ध्वनि का स्वर)

यह दृष्टान्त भारतीय दर्शन की स्पष्ट व्याख्या है। अपने स्व से बाहर हो जाना, अपने स्वरूप से निकल जाना नरक का अर्थात् दुःख का मार्ग है। अपने स्वरूप से निकल जाने का अर्थ है बिखर जाना, यानी उत्तेजना में बह जाना। जब मनुष्य उत्तेजना के वशीभूत होता है, उसकी ऊर्जा बाहर बह जाती है और वह खोखला हो जाता है। यह नरक है अपने को खो देना ही संसार के दुःखों का मूल है। और स्वरूप में स्थिति ही स्वर्ग का मार्ग है, सुख का हेतु है। वैयक्तिकता को ज्ञान के प्रति समर्पित कर देना ही मोक्ष है।

भारतीय जीवन दर्शन का मूल सूत्र यही है कि उत्तेजना चैतन्य को बहाकर बिखरा न दे। चैतन्य निसर्ग के वर्तुल से निकल कर भटक न जाये। क्योंकि बाहर जो कुछ भी है सब विकृति है, नश्वर है, बदलने वाला है। जीवन को अगर इसके साथ मिला दिया तो इसके गुण जीवन के नैरन्तर्य को भंग कर देंगे। अनित्य वस्तु का संसर्ग अनित्यता ही प्रदान कर सकता है। नित्य आत्म सत्ता में अनित्यता का सम्प्रक्षण अज्ञान है। शरीरी जब अपने को शरीर समझ बैठता है तब अध्यास ग्रसित हो जाता है। यह विपर्यय अर्थात अविद्या है। अविद्या का अर्थ है नित्य को अनित्य, अपवित्र को पवित्र, दुःख को सुख, समझना। जब जीवन की गाइड लाइन ही गलत खिंच जाय तब जिन्दगी का नक्शा सही कैसे हो सकता है? अविद्या मृत्यु है। अज्ञानी को चारों ओर फैला हुआ यह नाम रूपात्मक विस्तार आसक्ति में फँसाकर नष्ट कर देता है। नचिकेता को आचार्य यम ने कहा-

पराचः कामाननुयन्ति बाला-
स्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्।
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा
ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते।।

जो वाह्य विषयों की चमक-दमक और आपात् रमणीयता को देखकर उनमें आसक्त हुए रहते हैं और उनके पाने और भोगने में ही दुर्लभ अमूल्य जीवन को खो देते हैं वे मूर्ख हैं। निश्चय ही सर्वकालव्यापी मृत्यु के पाश में बंध जाते हैं; परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे इस विषय पर गहराई से विचार करते हैं। ये इन्द्रियों के भोग तो जीव को अन्य योनियों में भी पर्याप्त मिल सकते हैं। मनुष्य शरीर सबसे विलक्षण है। इसका वास्तविक उद्देश्य विषयोपभोग कभी नहीं हो सकता। इस विचार से स्पष्ट हो जाता है जीवन की बहिर्मुखता केवल मृत्यु है। अस्तु अनित्य के संसर्ग से हटकर नित्य आत्म भाव में स्थित रहना ही परम पुरुषार्थ है। अतः आर्ष मनीषियों ने यह निश्चित किया कि जीवन वाह्यसक्ति में फंसा न होना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य वाह्य संसार से सम्बन्ध तोड़ ले। न तो ऐसा किया जा सकता है और न यह सम्भव ही है। यदि वस्तुपरक अनुभूति अभिप्रेत न होती तो प्रकृति कभी भी मानव शरीर की ऐसी संरचना न करती जैसी उसने की हुई है। हमारा शरीर इस प्रकार की क्षमताओं से युक्त है जिनसे नाम रूपात्मक जगत को भोगा जाता है। भोग से भागने की बात आर्य दर्शन का सत्य नहीं है। आर्य दर्शन पलायनवादी नहीं है और न ही निराशावादी है। यह जगत के अस्तित्व को अस्वीकारता नहीं है किन्तु भोग के प्रति अनासक्ति इसकी विशेषता है। 'अनासक्त होकर त्याग भाव से संसार को भोगो।'-वेद की प्रसिद्ध उक्ति है। यह उक्ति गीता का आधार है-

'तेन त्यक्तेन भुंजीथा।'

गीता इस मंत्रांश की की व्याख्या है। वैदिक जीवन दर्शन का जैसा अद्भुत और सर्वांगीण निखरा रूप गीता में है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। अनासक्ति, कर्म की व्यावहारिकता कर्तव्य की भावना में है। कर्तव्य, जो तुम्हें इसलिए करना है कि कर्म तुम्हारा धर्म है। अतः समाज में वर्ण धर्म की स्थापना की गयी। वर्ण, गुण कर्म स्वभाव को बनाने वाली प्रकृति पर आधारित है। अर्थात् मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुकूल कर्म करे। प्रकृति में गुण वैषम्य विभिन्न प्रकार के कर्मों को जन्म देते हैं। कुछ कर्म उच्चतर हो सकते हैं तो कुछ निम्नतर। अतः ऋषियों ने वर्ण व्यवस्था निश्चित करके कर्मों के वैषम्य को सन्तुलित किया और कर्मफल को विश्व समाज को अर्पित करने का विधान बनाया। कर्मफल को 'सर्वजन हिताय' अर्पण करना यज्ञ कहलाता है। यज्ञ वैदिक संस्कृति का केन्द्र है, जिसके चारों ओर आर्य सभ्यता के ताने-बाने पूरे गये। यज्ञ श्याब्द का अर्थ संगतिकरण, देव पूजा और दान है। सारे जीवन के यज्ञीकरण का उपदेश श्रुति करती है। यज्ञीकरण का अर्थ है कर्मफल को सबके लिए अर्पित कर देना। जब कर्ता कर्म को कर्तव्य समझ कर करता है और फल के लिए अर्पित करता है तो जगत के बाह्य प्रलोभन उसे बांध नहीं पाते! बहिर्मुखता यानी बाहर फैलाव नहीं होता। कर्तव्य की भावना व्यक्ति को वर्ण धर्म और उसके स्वभाव से बाहर नहीं निकलने देती। वह अपने सामाजिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक स्वरूप में स्थित रहता है। इस प्रकार उसका समाज के साथ सामंजस्य बना रहता है। मर्यादा और अध्यात्म के वर्तुल का अतिक्रमण वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की समरसता को भंग करके सारे मानव जीवन को अशान्त कर देता है।

अतः अपने स्वरूप में, कर्तव्य में, दायित्व में, सर्वदा स्थित रहना ही स्वर्ग है सुख है।

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

काव्यायन

गुजरात की धरा से

❑आचार्य सतीश सत्यम

गुजरात की धरा से इक सूर्य जगमगाया,
उसकी बराबरी का दूजा नजर न आया।

वेदों की ओर लौटो, ऋषिवर का था यह नारा
भटके जो दर बदर थे, उन्हें मिल गया किनारा
ज्योति दिखा के उसने, तम से हमें बचाया।

लाखों की सम्पदा को, ठुकरा दिया था पल में
एक बात थी बताई, राणा को उस महल में
जिसको तू कहता मेरी, तेरी नहीं वो माया।

दीनों अनाथों का जो, बनकर हबीब आया
सदियों से जो अलग थे, उनको करीब लाया
मार्ग बतला के सच्चा, जीने का ढंग सिखाया।

बेदर्द इस जहाँ ने, क्या क्या सितम न ढाये
एहसान अनगिनत हैं, 'सत्यम' गिने न जायें
खुद पी गया जहर वो, अमृत हमें पिलाया।

–युवा उद्घोष, वर्ष 30, अंक 11 से साभार

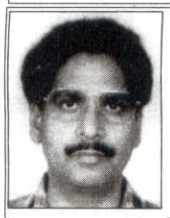

स्नेहिल दीप

❑डॉ. कैलाश निगम

घिरने लगी है अँधियारी, घृणाभरी रैन
स्नेह वाले दीप फिर द्वार-द्वार कीजिये।
कहीं कोई सूरज दिखे तो, फिर स्वागत में
कण्ठ उसके सुमन हार-हार कीजिये।
पौरुष जगाओ विनसाओ मन का प्रमाद
दीनता के सारे पट तार-तार कीजिये।
अपनी धरा की अर्चना को एक बार नहीं
बलिदान यहाँ पर बार-बार कीजिये।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

ऋषि को नमन!

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दीवाली के दिन बुझा, दयानन्द-तन-दीप।
तम के सम्मुख युद्धहित, पहुँचा ज्ञान-महीप।।

शब्द-शब्द आलोकमय, शुचि 'सत्यार्थ प्रकाश'।
जन-गन-उर में भर दी, आत्मज्ञान की आश।।

दयानन्द ऋषि को नमन, अथक त्याग बलिदान।
आर्य संस्कृति पर चलें, करें राष्ट्र उत्थान।।

विश्व शांति की कामना, पूर्ण करेंगे वेद।
दयानन्द की साधना, मिटा चुकी भ्रम भेद।।

शासन सत्ता में रहें, आर्य युवा विद्वान।
कर्मशील हों राष्ट्रगण, फैले वैदिक ज्ञान।।

श्रेष्ठ आर्यजन विश्व में, ऋषि मुनि की संतान।
चारों वेदों में निहित, सत्य ज्ञान-विज्ञान।।

आर्य जाति के शत्रु दो, क्षुद्रज्ञान पाखण्ड।
मिटे अन्धविश्वास तम, भारत रहे अखण्ड।।

वेद सृष्टि आरम्भ से, सत्य ज्ञान सद्ग्रन्थ।
आर्य लोक कल्याण का, एक अलौकिक पंथ।।

ज्ञान दृष्टि पथ पर रहे, चलो वेद की ओर।
खोज रहे क्यों ईश को, जिसका ओर न छोर।।

दयानन्द जी ने दिया, वेद विहित सन्देश।
आर्य बनो आदर्शमय, मिटे विश्व का क्लेश।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

तुम मिल जाते!

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

जख़्म हृदय के सब सिल जाते,
काश! हमें तुम मिल जाते।

दिल के चमन में छाई उदासी,
तुम आते तो गुल खिल जाते।

उनके करते चार जो आँखें,
पहलू से गुम हो दिल जाते।

इश्क़ की ज़द में आ जाते जो,
दिल उनके हो बिस्मिल जाते।

ठौर नहीं है मंज़िल का पर,
सब ही सम्ते-मंज़िल जाते।

सिन्धु से उठके बरसते बादल,
थक के उसी में फिर मिल जाते।

बारी-बारी सब ही 'नासिर',
छोड़ निगोड़ी महफ़िल जाते।

–जी–02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

दयानन्द को प्रणाम है!

❑जय प्रकाश शुक्ल

शान्ति उपदेश नित्य मिलते संदेश जहाँ
भारत की देवभूमि विश्व में ललाम है।

ज्ञानज्योति दित्यज्योति जलती सदैव जहाँ
आसन नियम प्रत्याहार प्राणायाम है।

ऋषि-निर्वाण हुआ जिस दिव्य भूमि पर,
अजमेंर धरती का तीर्थ पुण्यकाम है।

धर्म के प्रतीक ज्ञानपुंज धर्मकर्म विद्
महाऋषि पूज्य दयानन्द को प्रणाम है।।

–आशियाना कालोनी, आलमबाग, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

आज जो शिशु कल वही पूर्वज बनेगा
आज पूर्वज किन्तु कल आत्मज बनेगा
आज कीचड़ में पड़ा जो दिख रहा है
'हर्ष' खिलकर कल वही पंकज बनेगा।

आज निर्बल कल वही बलवान होगा
आज निर्धन कल वही धनवान होगा
आज जो पिछड़ा दिखाई दे रहा है
विश्वगुरु कल वही हिन्दुस्तान होगा।।

–अक्ष मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फ़ैजाबाद

कालजयी काव्य

महर्षि दयानन्द निर्वाण पर्व

❑दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'

घनघोर तिमिर का वक्ष चीर भू पर उतरी थी एक किरण।
संदेश सवेरे का लाई हम करते उसका अभिनन्दन।।

जड़ता के पूजन-अर्चन ने जब चेतन का अपमान किया।
तब तूने मानव के मन में चेतनता का आह्वान किया।।

जंजीरों में जकड़े स्वदेश को राह दिखाई थी तूने।
जिसको न काल भी बुझा सके वह ज्योति जलाई थी तूने।।

तू पराधीनता पाश तोड़कर मुक्ति दिलाने आया था।
वेदों की धरती सोई थी तू उसे जगाने आया था।।

तेरी हुँकारें काव्य बनीं तेरे विचार इतिहास बने।
तूने बोये जो ज्ञानबीज वे पतझड़ में मधुमास बने।।

मिथ्या विश्वासों को तूने गति का वरदान नहीं माना।
तूने पत्थर के टुकड़ों को पलभर भगवान नहीं माना।।

तूने स्वराज्य का शंख ध्वनित कर दिया देश की वाणी में।
तप-त्याग-तेज के अंगारें पाले अनमोल जवानी में।।

तू अगर न बनता प्रलय वेग निष्ठा स्वराज्य की आँधी का।
तो कभी नहीं पूरा होता सपना भारत में गांधी का।।

तू महादेश का निर्माता भारत का भाग्य विधाता है।
इस धरती का कवि 'विद्रोही' चरणों में शीश झुकाता है।।

दयानन्द ने इस मुल्क को जगाया

❑सूफी फकीर रहीम बख़्श

सचाई पर झुठाई कभी ग़ालिब आती नहीं।
और वलियों की जुबां से बुराई सुनी जाती नहीं।।
किसी चीज़ की क़ीमत उसका वक़्त आने पर होती है।
मुल्क हिन्द में वलियों की क़ीमत ज़माना गुज़र जाने पर होती है।

दयानन्द ने ही इस मुल्क़ को गहरी नींद से जगाया।
हाय अफ़सोस कि एवज़ में हमने उन्हें ज़हर पिलाया।।
हिन्दू हो चाहे हो मुसलमां इस मुल्क़ हिन्द का।
इंसाफ़ से बोलो कि दयानन्द था इस ज़माने में रहनुमा सबका।।

वतन को बचाया मजहब को बचाया।
था इन पर अंग्रेज़ों का गलवा छाया।।
मेरा हाथ जोड़ के है उनके क़दमों में सलाम।
मेरा ज़मीर का है यही सच्चा ईमान और पैग़ाम।।

(भारतीय साहित्य के निर्माता : दयानन्द सरस्वती' से साभार)

स्वर्णिम दीपावली

❑आभा मिश्रा

स्वर्णिम अवसर दीवाली का, आओ मिलकर सभी मनायें।
हुआ प्राप्त है ज्योति पर्व का, घन तम हम सब दूर भगायें।।

मन का दीपक चलो जलायें, तिल-तिल जलकर करें प्रकाश।
अपना भारत देश स्वर्ग हो, आह्लादित अवनी-आकाश।।
महलों में ही नहीं मात्र हम, कुटियों में भी दीप जलायें।
स्वर्णिम अवसर दीवाली का, आओ मिलकर सभी मनायें।

जगमग करती दीपावलियाँ, घन तम दूर भगाती हैं।
मन को क्या जीवन के हर पल को ज्योतित कर जाती हैं।
निज मन-मानस निर्मल करके, गृह-गृह जागृति दीप जलायें।
स्वर्णिम अवसर दीवाली का, आओ मिलकर सभी मनायें।

प्रासाद से कुटियों तक भी, तम की ध्वनि आने न पाये।
सबके ही उर आह्लादित हों, अक्षिनीर न आने पाये।।
न हो स्वर्ग जाने की इच्छा, पृथ्वी को ही स्वर्ग बनायें।
स्वर्णिम अवसर दीवाली का, आओ मिलकर सभी मनायें।

–प्रधानाध्यापिका, लोकमान्य विद्यामंदिर, सआदतगंज लखनऊ

thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का सम्मान

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा दिनांक १०.०६.१४ को राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे का अभिनन्दन किया गया। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस.दुबे, तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, डी.ए.वी.स्कूल कोटा की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, तलवंडी के मंत्री भैरोलाल शर्मा, वेद प्रचार समिति के मंत्री प्रभूसिंह कुशवाह, आर्य विद्वान् राम प्रसाद याज्ञिक, शोभाराम आर्य ने रोटरी बिनानी सभागार में आयोजित कार्यक्रम कें श्रीमती राजे को केसरिया पगड़ी, गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया दुपट्टा, मोतियों की माला व 'ओ३म्' का स्मृति चिन्ह भेंट कर प्रार्थना व स्वस्तिवाचन मंत्रों का उच्चार करते हुए सम्मान किया। साथ ही उन्हें अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' भी भेंट किया गया।

श्री चड्ढा ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्रीमती राजे ने राजस्थान की विभिन्न जेलों में बन्द ३५०० कैदियों की सजा कम की तथा १५० कैदियों की सजा माफ कर उन्हें रिहा किया गया। इसी संदर्भ में श्रीमती राजे का सम्मान आर्य समाज द्वारा किया गया। मंच पर उपस्थित कोटा बूंदी क्षेत्र के सांसद ओम बिरला ने कहा- 'कोटा में अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज बहुत कार्य कर रहा है। कोटा में समाजसेवा के क्षेत्र में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सेवा में इनकी लगन व निष्ठा से मैं बहुत प्रभावित हूँ।'

महाशय धर्मपाल से शिष्टाचार भेंट

आर्य समाज जिला सभा कोटा के तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने आर्य समाज के महादानी महाशय धर्मपाल आर्य के साथ दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की। अरविन्द पाण्डेय, प्रचार व कार्यालय सचिव, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के नेतृत्व में वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री तथा प्रभुसिंह कुशवाह, मंत्री वेद प्रचार समिति कोटा ने महशय धर्मपाल से उनके निवास पर मिले तथा उन्हें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर एमडीएच वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) कोषिक्कोड केरल के शिलान्यास समारोह का स्मृतिचित्र संग्रह (एलबम) भेंट किया। श्री अरविन्द पाण्डे ने महाशय जी को आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा किये जा रहे आर्य समाज के वेद प्रचार एवं सामाजिक कार्यों की विस्तृत जानकारी दी तथा कोटा आने का निमंत्रण दिया। इस अवसर पर महाशय जी ने कहा कि प्रत्येक कार्य को निष्ठापूर्वक करो, जन जन को महर्षि दयानन्द तथा वेद के सिद्धान्तों से अवगत कराओ। भेंट के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य भी उपस्थित थे।

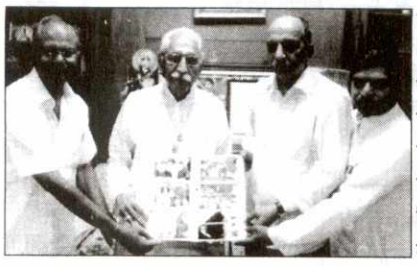

लखनऊ-समाचार

संस्मरण एवं व्यंग्य-संग्रह विमोचन समारोह

'ज्ञान प्रसार संस्थान' के तत्वावधान में दि.५ अक्टूबर को सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, गोमती नगर के सभागार में लेखिका नीरजा द्विवेदी के विदेश प्रवास के संस्मरण 'स्विट्ज़रलैण्ड के वे २१ दिन' एवं लेखक महेश चंद्र द्विवेदी के व्यंग्य-संग्रह 'वीरप्पन की मूंछें' का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता सुविख्यात पत्रकार के.विक्रम राव ने की तथा मुख्य आतिथ्य प्रसिद्ध व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ.ऊषा सिन्हा ने किया।

श्रीमती नीरजा द्विवेदी द्वारा सस्वर सरस्वती वंदना प्रस्तुत करने के उपरांत दोनों नवप्रकाशित पुस्तकों को मंचस्थ विद्वज्जनों ने लोकार्पित किया। नीरजा द्विवेदी ने संस्मरण के एक रोचक अंश 'सूज़न के यहाँ डिनर' का पाठ किया। महेश चंद्र द्विवेदी ने समस्त अतिथियों का स्वागत अपने व्यंग्यात्मक ढंग से इस प्रकार किया- 'वीरप्पन की मूंछों' के विमोचन समारोह में आप द्वारा पधारने का साहस दिखाने पर मैं अभिभूत हूँ। और फिर 'अखाड़ा और अखाड़ेबाज़ी' शीर्षक व्यंग्य पढ़कर समाज में व्याप्त अंधविश्वासों एवं पाखण्डों पर गहरी चोट की।

पूर्व न्यायाधीश रामचंद्र शुक्ल ने अपनी समीक्षा में कहा, 'नीरजा द्विवेदी द्वारा विरचित संस्मरण लौकिक जीवन की अलौकिक कथाओं का सार संग्रह है।' डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने महेश चंद्र द्विवेदी के व्यंग्यों को सार्वभौमिक, प्रासंगिक एवं प्रभावोत्पादक बताया। मुख्य अतिथि गोपाल चतुर्वेदी एवं अध्यक्ष के.विक्रम राव ने भी दोनों पुस्तकों की प्रशंसा की एवं उन्हें ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं रोचक बताया। नीरजा द्विवेदी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

गीतवल्लरी काव्य का विमोचन

०७.०६.१४। साहित्यकार परमानन्द रस्तोगी की ८२वीं जयन्ती पर महिला उत्थान समिति एवं भारतीय प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में कवयित्री श्रीमती आभा मिश्रा की नवीनतम प्रकाशित काव्यकृति 'गीत वल्लरी' का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी, सीतापुर को भी सम्मानित किया गया। अध्यक्षता विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद', आई.ए.एस., पूर्व निदेशक, उ.प्र.हिन्दी संस्थान ने की। मुख्य अतिथि प्रो.ऊषा सिन्हा, पूर्व विभागाध्यक्ष, भाषा विज्ञान, ल.वि.वि. थीं। संचालन महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' ने किया। कार्यक्रम का संयोजन अरविन्द रस्तोगी एवं धन्यवाद ज्ञापन हरिप्रसाद मिश्र 'असीम' ने किया। इससे पूर्व राका मिश्रा ने आभा मिश्रा द्वारा रचित वाणी वंदना से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

समारोह में कवयित्री रमा आर्य 'रमा', डा.मिर्जा हसन नारिस, डॉ.बृजेन्द्र निगम, डॉ.अमिता दुबे, रमेश चन्द्र भट्ट, महेश पाण्डेय, अरविन्द रस्तोगी, मीरा चौरसिया, आवारा नवीन आदि अनेक साहित्यकार उपस्थित थे। *(महेश पाण्डेय)*

सीतापुर-समाचार

हिन्दी साहित्य परिषद

हिन्दी साहित्य परिषद्, ब्रह्मपुरी सीतापुर के तत्वावधान में सितम्बर माह को हिन्दी राष्ट्रभाषा-माह के रूप में मनाया गया। जनपद सीतापुर में विभिन्न स्थानों पर सात गोष्ठियाँ आयोजित की गईं; तथा सात साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। समस्त कार्यक्रमों का संचालन एवं संयोजन परिषद् के अध्यक्ष श्री अवधेश शुक्ल ने किया।

आर्य समाज बिसवाँ का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बिसवाँ का वार्षिक उत्सव दि.३ से ५ अक्टूबर तक समारोह पूर्वक आर्य समाज मंदिर के प्रांगण में आयोजित हुआ। उत्सव में बाहर से पधारे हुए विद्वानों, उपदेशकों, भजनोप- देशकों ने अपने प्रवचनों, व्याख्यानों एवं भजनों के द्वारा जनता को वेद ज्ञान की शिक्षाओं से अवगत कराया, वहीं जनपद के विख्यात संन्यासी, उपदेशक एवं कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए। उत्सव में महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया।

(वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी')

दिल्ली-समाचार

अमृत महोत्सव

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के ७५वें जन्म दिवस पर राजधानी दिल्ली में अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह रविवार १६ नवम्बर २०१४, प्रातः १० से २ बजे तक योग निकेतन, रोड नं. ७८, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६ में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर स्वामी जी के सम्मान में अभिनन्दन ग्रंथ भी भेंट किया जायगा जिसका सम्पादन डॉ.सुरेन्द्र सिंह कादियाण कर रहे हैं। स्वामी जी से परिचित महानुभावों से अपील है कि उनके बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख अथ कविता अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकाशनार्थ यथाशीघ्र भेजें-डॉ.सुरेन्द्र सिंह कादियाण, सम्पादक स्वामी डॉ.दिव्यानन्द अभिनन्दन ग्रंथ, पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार-२४६४०७।

शोध लेख आमंत्रित

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा-उ.प्र.लखनऊ द्वारा शिक्षकों साहित्यकारों, वैज्ञानिकों, विधि विशेषज्ञों चिकित्सकों, तकनीशियनों, प्रशासकों, सूचना कर्मियों एवं अन्य क्षेत्रों में हिन्दी प्रतिष्ठापन हेतु कार्यरत विद्वानों से 'हिन्दी का वैश्वीकरण' विषय पर एक शोध लेख आमंत्रित किया जाता है। यह लेख ए-४ आकार के पृष्ठ एवं १६ आकार फॉन्ट में दोहरी दूरी पर टंकित होना चाहिए। लेख के प्रारंभ में १०० शब्दों का सारांश आवश्यक रूप से संलग्न होना चाहिए तथा लेखन १५०० शब्दों से अधिक न हो। लेख विलम्बतम १५ दिसम्बर २०१४ तक अद्योहस्ताक्षरकर्ता के भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा-उ.प्र.लखनऊ के कार्यालय पते (ए-७६६, इन्दिरा नगर, लखनऊ) पर प्रेषित किया जा सकता है। कृपया लेख के शीर्षक के नीचे लेखक अपना नाम, पद, संस्था का नाम, पता, दूरभाष, चलभाष अवश्य अंकित करें। श्रेष्ठ लेखों को फरवरी २०१५ में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय भाषा उत्सव संगोष्ठी में पढ़ने का अवसर दिया जायगा तथा स्मारिका में प्रकाशन के साथ ही श्रेष्ठ विद्वान, लेखकों को सम्मानित भी किया जायेगा। *(महेश चन्द्र द्विवेदी, अध्यक्ष)*

सम्पादक की डायरी

कपड़ा कोठी का विस्तार - दि.२५.०६.१४ : श्री वैभव जैन के वाणिज्य संस्थान कपड़ा कोठी विस्तार नये शोरूम के शुभावसर पर यज्ञ। वैभव एवं श्रीमती तोषी जैन(पत्नी) सहित समस्त पारिवारिक जन यज्ञ में सम्मिलित हुए तथा अपनी शुभकामनाएँ दीं। पितामह श्री निर्मल कुमार जैन ने यज्ञ में भाग लेकर अपने सुमधुर गीत गायन द्वारा आशीर्वाद दिया। वैभव की माताजी ने समस्त कार्यक्रम का सुचारु संयोजन किया।

शान्ति यज्ञ - दि.२५.०६.१४ : एस-२२६, शक्तिनगर। श्री आर.के.मेहरोत्रा एडवोकेट के पुत्र स्व.मनीष मेहरोत्रा की पुण्यस्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन वैदिक विधि द्वारा किया गया। यज्ञ में क्षेत्र के निवासियों के साथ ही पतंजलि योगपीठ, लखनऊ के साधक, साधिकाओं तथा पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया, जिनमें- श्री मदनगोपाल सिंहल, श्रीमती मीना दीक्षित, जी.के.श्रीवास्तव, श्रीमती पीयूष के नाम उल्लेखनीय हैं। यज्ञ का संचालन डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने किया तथा श्री पीयूष कान्त (अध्यक्ष, पतंजलि योग समिति, लखनऊ पूर्व) ने सान्त्वनापरक सम्बोधन दिया। स्व.मनीष की पत्नी शताक्षी मेहरोत्रा ने स्वयं यज्ञ में आहुतियाँ दीं। श्री आर.के.मेहरोत्रा, श्रीमती मेहरोत्रा तथा परिवार के अन्य सदस्यों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- पति के गुजर जाने की दशा में पत्नी के ससम्मान जीवन यापन की समुचित व्यवस्था करना समाज का दायित्व है। ज्ञातव्य है कि शताक्षी समाजवादी नेता श्री रविदास मेहरोत्रा की पुत्री हैं।

विवाहपूर्व यज्ञ - दि.२६.०६.१४ : इन्दिरानगर, मुंशी पुलिया के सन्निकट जनता गेस्ट हाउस में श्री रविप्रकाश तिवारी (उच्च न्यायालय में सेवारत) के सुपुत्र श्री मनीष तिवारी के पूर्व वैवाहिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत वरीच्छा एवं गोद भराई के संदर्भ में वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें उभय पक्षों के पारिवारिक जनों एवं अतिथियों ने भाग लिया। यज्ञ की समाप्ति पर प्रीतिभोज का सभी रसास्वादन किया।

नवीन शो रूम - दि.०३.१०.१४ : कपड़ा कोठी, नीलगिरि चौराहा, फैजाबाद रोड के अन्तर्गत श्री अजय कुमार जैन के नवीन शोरूम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ हवन पूजन के साथ सम्पन्न हो गया। सदैव की भाँति डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा अजय दम्पति को वैदिक शुभाशीर्वाद प्रदान किया। श्री अजय एवं श्रीमती अजय जैन के साथ परिवार के अन्य नव दम्पतियों- श्रीमती तोषी, वैभव तथा पुत्र-पुत्रियों ने यज्ञ में श्रद्धापूर्वक भाग लिया तथा आहुतियाँ अर्पित कीं। अजय के पिता श्री निर्मल कुमार जी ने न कि यज्ञ में भाग लिया वरन् एक सुंदर समाजोपयोगी गीत भी सुनाया-'जिस भजन में प्रभु का नाम न हो, उस भजन को गाना न चाहिए'।

यज्ञ एवं संस्कार - दि.०८.१०.१४ : १६/८३८, रिंगरोड, इन्दिरानगर में श्री धीरेन्द्र शंकर वाजपेयी एवं श्रीमती निमिषा वाजपेयी के पुत्र के जन्मोत्सव पर वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर प्रख्यात वेद विदुषी डॉ.श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार की उपस्थिति ने समारोह की महिमा को विस्तृत कर दिया तथा नवजात शिशु का नामकरण- 'वेदांश शंकर' रखा गया। उपस्थित समस्त पारिवारिक जनों ने चि.'वेदांश' को आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर शिशु के पितामह श्री पं.उमाशंकर वाजपेयी, दादी श्रीमती सिद्धि कुमारी वाजपेयी, श्री ज्ञानेश्वर वाजपेयी, श्रीमती अनीता वाजपेयी, श्री पुलकित मिश्र, श्री रणजीत सिंह, समीर कुमार एडवोकेट, कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा', पं.ज्ञानेन्द दत्त त्रिपाठी (पूर्व प्रधान, आर्य समाज चौक) इत्यादि ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। यज्ञोपरान्त प्रीतिभोज का आयोजन सम्पन्न हुआ।

स्वागत समारोह - दि.१७.१०.१४ : श्री कपित एवं वर्तिका दर्शन की सुपुत्री आयुष्मती अविका के प्रथम बार सिंगापुर से लखनऊ आगमन के अवसर पर ८२, भूसामंडी, अमीनाबाद में श्री दीपक दर्शन के आवास पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञवेदी पर बालिका अविका का अन्नप्राशन एवं चूड़ाकर्म संस्कार सम्पन्न हुआ। अविका श्री दीपक दर्शन की पौत्री है। इस अवसर पर दीपक जी के चाचा चाची श्री संतोष कुमार आर्य एवं श्रीमती शोभा आर्य भी उपस्थित थीं। पारिवारिक जनों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर अविका को आशीर्वाद दिया, संस्कारों की प्रक्रिया को देखा, सराहा तथा प्रीतिभोज का आनन्द लिया।

सुन्दरम् काव्य गोष्ठी

०५.१०.१४। 'सुन्दरम्' साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था की मासिक काव्य गोष्ठी अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भूषण के जानकीपुरम आवास पर आयोजित हुई जिसमें मुख्य अतिथि थे साधुशरण वर्मा 'सरन' तथा विशिष्ट अतिथि डॉ.कैलाश निगम। घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' द्वारा माँ वाणी के शब्दार्चन के पश्चात् रमाशंकर सिंह के गीत 'मन तुम्हारा किसलिए अनमना है, क्या किसी ने पुनः बेटी को जना है' ने श्रोताओं को भावाभिभूत किया। अमृत खरे के गीत 'अकेला गीत ही है जो दुःखों में साथ देता है' ने संवेदनाओं को अर्थवत्ता प्रदान की। गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' ने यथार्थबोध कराते हुए पढ़ा- 'सुख मिथ्या आश्वासन जैसा, दर्पण के सम्भाषण जैसा'। अतिथि कवियों के अतिरिक्त संजीव मधुकर, अनिल श्रीवास्तव, सुनील कुमार वाजपेयी, शोभा दीक्षित, मेघ, महेश घावरी, चेतराम अज्ञानी, योगेश सिंह, अखिल कुमार 'व्यथित', फुरकत लखीमपुरी, शिवनाथ सिंह, उपेन्द्र वाजपेयी, प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव सुकवियों ने इन्द्रधनुषी काव्य-रसों से श्रोताओं को रसासिक्त किया। इस अनन्तर संस्था द्वारा पर्यावरण प्रेमी एवं भोजपुरी कवि कृष्णानन्द राय का सारस्वत सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन हरिमोहन वाजपेयी 'माधव' ने किया। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

आभार प्रदर्शन

सितम्बर २०१४ अंक में 'यं रक्षन्ति प्रचेतसो' समाचार पढ़कर जिन अनेक हितैषियों, शुभचिन्तकों ने श्री आलोक वीर आर्य के प्रति अपनी सहानुभूति एवं संवेदनाएं व्यक्त की हैं; हम उन सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। प्रभु की कृपा से आलोक जी स्वस्थ हैं और अपना कार्य सम्पादित कर रहे हैं। *-डॉ.वेद प्रकाश आर्य*

thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज इंदिरानगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिकोत्सव ४ से ६ अक्टूबर तक समारोह पूर्वक आर्य समाज मंदिर १, वैशाली इन्क्लेव, सेक्टर-६ में मनाया गया। उत्सव में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य पुनीत जी (मेरठ) तथा भजनोपदेशक श्री श्याम जी राघव (दिल्ली) ने अपने व्याख्यानों एवं भजनों से जनता पर व्यापक प्रभाव डाला। स्थानीय विद्वानों में श्री अखिलेश कुमार लखनवी को आमंत्रित किया गया। श्री सत्यदेव वानप्रस्थी ने सदैव की भाँति यज्ञ के ब्रह्मा पद की शोभा बढ़ाई। उत्सव में त्रैतवाद, आश्रम व्यवस्था, ईश्वर का स्वरूप, वेदों में नारी का स्थान, वैदिक कर्मकांड का स्वरूप, वर्णव्यवस्था का वैदिक स्वरूप इत्यादि विषयों पर आचार्य प्रवर पुनीत जी ने विचार प्रस्तुत किये।

विभिन्न सत्रों में कार्यक्रमों का संचालन जयप्रकाश आर्य, डॉ.(इं.)वेद प्रकाश, डोरीलाल आर्य, श्रीमती कान्ति कुमार, रमेश चन्द्र त्रिपाठी तथा लक्ष्मण प्रसाद आर्य ने किया। कार्यक्रमों की अध्यक्षता श्री रामेन्द्र देव वर्मा प्रधान आर्यसमाज ने की। रविवार ६ अक्टूबर को प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

पं.सत्यपाल पथिक को सहयोग राशि प्रेषित

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं संगीतज्ञ श्री पं.सत्यपाल पथिक सम्प्रति गम्भीर रूप में अस्वस्थ हैं। उनके हृदय की शल्य चिकित्सा हो रही है। टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल ने उनकी चिकित्सा हेतु सहायतार्थ समस्त आर्य समाजों से अपील की है।

आर्य समाज इन्दिरा नगर, लखनऊ द्वारा तात्कालिक प्रभाव से ५०००रुपये का बैंक ड्राफ्ट पथिक जी की सहायतार्थ भेज दिया गया है। अन्य जो आर्य समाजें या आर्य सज्जन ८०वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् की सहायता करना चाहें तो सहायता राशि श्री सत्यपाल पथिक के नाम से चेक/ड्राफ्ट द्वारा उनके पते- ७०ए, गोकुल नगर, मजीठा रोड, अमृतसर, पंजाब-१४३००१- पर भेज सकते हैं।

सराहनीय योगदान

आर्य समाज इन्दिरा नगर के सदस्यों द्वारा जम्मू कश्मीर आपदा राहत कोष में १५,२०५/- का सराहनीय योगदान आर्य प्रतिनिधि सभा जे.एण्ड के. के भारतीय स्टेट बैंक खाते में २६ सितम्बर को जमा करायी गयी। जिन दानदाताओं के सहयोग से यह राशि एकत्रित हुई उनके नाम इस प्रकार हैं-माता महेशा देवी (श्री संसार नाथ शर्मा की माताजी)-२५००रु., रामेन्द्र देव वर्मा-१५००रु., रमेश चन्द्र त्रिपाठी, लक्ष्मण प्रसाद आर्य-११००रु.प्रत्येक, अभय पाल सिंह, आनन्द कुमारी, डा. प्रतुल्ल राज गुप्ता, कान्ति कुमार-१०००रु.प्रत्येक, जय प्रकाश आर्य, डा.अनिल, मनबासा राय, सुरेन्द्र कुमार निगम, डोरीलाल आर्य, इं.वेद प्रकाश, रमेश चन्द्र-५००रु. प्रत्येक; मूल चन्दर-२५३रु., सरिता श्रीवास्तव, जी.के.मिश्र-२५१रु.प्रत्येक, नरसिंह पाल, आनन्द प्रकाश वर्मा, मधुर अग्रवाल-२५०रु.प्रत्येक। *(लक्ष्मण प्रसाद आर्य)*

आर्य समाज सदर का वार्षिकोत्सव

हर धर्म कहता है माता-पिता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची उपासना है। उनका खयाल रखना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। यह बात पं.महेन्द्र पाल आर्य ने आर्य समाज सदर प्रांगण में आयोजित वार्षिक उत्सव के दूसरे दिन प्रातः नौ बजे प्रवचन में कही। धर्मग्रन्थों के माध्यम से माता-पिता की महत्ता को समझाते हुए उन्होंने कुरान और वेद की भी समीक्षा की। कहा कि वेदों में जीवन का सार है। वहीं ईश्वर प्राप्ति के लिए किसी स्थान विशेष की आवश्यकता नही। वह तो हर कण में, हर पल में सर्वत्र विद्यमान है। इस मौके पर डॉ.निष्ठा वेदालंकार ने पंच महायज्ञों के महत्व पर प्रकाश डाला। देव यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, बली वैश्व देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ व पितृ यज्ञ के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि इन सभी यों में एक ही उद्देश्य निहित है कि पर्यावरण शुद्ध हो और मानसिक शांति मिले। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः सात बजे से ब्रह्म व देव यज्ञ से हुई। इसके बाद भजन, प्रवचन, सूचनाएं व शांतिपाठ का आयोजन किया गया। शाम को छह बजे संध्या, भजनोपदेश, पं.सन्तोष वेदालंकार, पं.घनश्याम प्रेमी जी का भजनोपदेश हुआ। कार्यक्रम का समापन सूचनाओं व शांति पाठ से हुआ। *('दैनिक जागरण')*

आर्य समाज चन्द्रनगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चन्द्रनगर आलमबाग का ५७वां वार्षिकोत्सव २०.१०.१४ से २३.१०.१४ तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रकल्याण यज्ञ, ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपमालिका पर्व वैदिक परम्पराओं के अनुसार मनाया गया। अंतिम दिन आर्य उपप्रतिनिधि सभा का मासिक अधिवेशन भी सम्पन्न हुआ तथा ऋषिलंगर की सम्यक् व्यवस्था की गई। आचार्य वेदव्रत अवस्थी एवं आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार के आचार्यत्व एवं निर्देशन में यज्ञ होता रहा; यज्ञ प्रमियों ने सपरिवार भाग लिया। नित्यप्रति वैदिक विद्वान डॉ.कैलाश शास्त्री का वेदोपदेश हुआ तथा श्री राम मगन शास्त्री की भजन मंडली का गायन होता रहा। श्री रण सिंह प्रधान आर्य समाज ने धन्यवाद ज्ञापन किया। *(अमिता बिरमानी, मंत्री)*

लाला हरप्रसाद की स्मृति में यज्ञ एवं गोष्ठी

दिनांक २६.०६.१४ को अलीगंज वैदिक सत्संग द्वारा सायं ५.३०बजे 'योगाश्रम' लखनऊ पर विशेष संध्या, यज्ञ, भजन एवं गोष्ठी आयोजित की गई। श्री पाल प्रवीण ने अपने पितामह लाला हर प्रसाद (मवाना, मेरठ) के जीवन पर प्रकाश डाला। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामकृष्ण शास्त्री (गुरुकुल आश्रम, जानकीपुरम) थे। गोष्ठी में आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य की स्व.लाला हरप्रसाद की स्मृति में रचित रचना पढ़कर सुनाई गई, जिसकी सभी ने भूरि भूरि सराहना की। श्री रामकृष्ण शास्त्री ने अपने उद्बोधन द्वारा कुछ जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। गोष्ठी में देवेन्द्र स्वरूप गुप्त, शिवशंकर लाल वैश्य, सेवक राम आर्य, एस.एस.जुत्शी, आर.एस.यादव, एन.सी.साहू, श्रीमती आदर्श गुप्त, शशि रस्तोगी, श्रीमती उषा निगम, श्रीमती शशि गुप्त, श्रीमती कमलेश पाल, श्रीमती गीतांजलि एवं अभिषेक इत्यादि गण्यमान व्यक्ति उपस्थित थे। *(पाल प्रवीण)*

ग्रन्थ विमोचन समारोह

उद्बोध सेवान्यास उ.प्र. के तत्वावधान में डॉ.विमला सिंह (पूर्व प्राचार्या-मुंशी रघुनन्दन प्रसाद सरदार पटेल महाविद्यालय, बाराबंकी) के शोधग्रंथ 'प्रसाद का काव्यलालित्य' का विमोचन समारोह दि. २७.०६.१४ को हिन्दी संस्थान लखनऊ के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 'काव्य-समीक्षा के प्रतिमान' विषय पर साहित्य के अध्येताओं और विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। समारोह की अध्यक्षता डॉ.कन्हैया सिंह, आजमगढ़ (पूर्व अध्यक्ष- भाषा संस्थान, लखनऊ) ने की। मुख्य अतिथि थे- 'साकेत से वृन्दावन' महाकाव्य के रचयिता- डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव 'नन्दन' (प्राक्तन प्रोफेसर, शान्ति निकेतन)। विशिष्ट अतिथि वक्ता थे- डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, ल.वि.वि. एवं आनन्द प्रकाश मिश्र 'अभय', प्रधान सम्पादक 'राष्ट्रधर्म' लखनऊ।

कार्यक्रम का निर्देशन प्रो.शिवमोहन सिंह, पूर्व कुलपति अवध वि.वि., फैजाबाद ने किया तथा संचालन डॉ.अनीता सिंह रीडर हिन्दी विभाग, जनेस्मा महाविद्यालय बाराबंकी ने किया। समारोह की प्रमुख विशेषता और आकर्षण का केन्द्र थे- गुरुओं के गुरु- डॉ.देवकी नन्दन श्रीवास्तव 'नन्दन'।

समारोह में आयोजन समिति एवं डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव के प्रमुख शिष्यों में डॉ.राम अँजोर सिंह, डॉ.पाण्डेय रमेन्द्र, डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ', डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, प्रो.शिवमोहन सिंह की ओर से डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने बृहद् अभिनन्दन पत्र भेंट किया तथा शॉल, माल्यार्पण एवं स्मृतिचिन्ह देकर उनका अभिनन्दन एवं स्वागत किया। डॉ.ऊषा सिन्हा, डॉ.सरला शुक्ल एवं पीयूष श्रीवास्तव ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा में श्रीवृद्धि की।

डिम्पल सर्वश्रेष्ठ

उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी में जो नया नेतृत्व उभर रहा है; उसमें कन्नौज की सांसद श्रीमती डिम्पल यादव अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने में सफल रही हैं। हुआ यह कि समाजवादी पार्टी के जनेश्वर मिश्र पार्क गोमती नगर में आयोजित महासम्मेलन के मंच पर जहाँ युवा सांसदों एवं नेताओं ने पानी पी पीकर श्री नरेन्द्र मोदी को कोसने में अपनी सारी ताकत लगाई, वहीं श्रीमती डिम्पल ने अपने शालीन, संवेदनशील एवं विचार-विश्लेषण परक भाषण द्वारा सभी के दिलों में अपनी जगह बनाई है।

लखनऊ की गौरवपूर्ण उपलब्धि

पाश्चात्य और पौर्वात्य साहित्य पर मजबूत पकड़ रखने वाली प्रख्यात विदुषी डॉ.शान्तिदेव बाला ने ब्रह्मविद्या पर अपना ग्रंथ 'उपनिषद-दर्शन' पूर्ण कर लिया है। शीघ्र ही यह ग्रंथ प्रकाशित होकर लखनऊ के वैदुष्य में चार चाँद लगाने में सफल होगा- ऐसा हमारा विश्वास है। *(आर्य लोक वार्ता, न्यूजडेस्क)*

देवेन्द्र पाल वर्मा पुनः पदासीन

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., मीराबाई मार्ग, लखनऊ के अध्यक्ष पद पर पुनः पदासीन हो गये हैं। माननीय उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ ने अपने २६.०६.१४ के निर्णय द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के १४.०४.१३ को सम्पन्न हुए निर्वाचन को मान्यता प्रदान कर दी है। आपके साथ ही मंत्री पद पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द तथा कोषाध्यक्ष डॉ.धीरज सिंह ने भी कार्यभार ग्रहण किया है। आशा है, सदाचार को विशेष महत्व देते हुए अधिकारीगण आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.को उसकी पुरातन गौरव गरिमा पुनः प्रदान करने में सफल होंगे। 'आर्य लोक वार्ता' की शुभकामनाएँ।

डॉ.आनन्द बरनवाल की ८०वीं जयन्ती

०२.१०.१४। गाँधी जयन्ती और लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती के साथ ही दो अक्टूबर को एक और नाम जुड़ गया- वह है आनन्द बरनावाल जयन्ती। आर्य समाज वेदमंदिर राजाजीपुरम, लखनऊ के संस्थापक-अध्यक्ष डॉ.आनन्द बरनवाल का ८०वाँ जन्म दिवस श्रद्धा और सम्मान के साथ आर्य समाज मंदिर में मनाया गया। प्रातःकालीन यज्ञ आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने सम्पन्न कराया- जहाँ उपस्थित नर-नारियों ने डॉ.आनन्द जी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु जीवन के प्रति शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

यज्ञोपरान्त सभागार में श्रीमती स्नेहलता जी ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये तथा आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने प्रवचन के माध्यम से आशीर्वाद देते हुए डॉ. आनन्द जी की सेवाओं पर प्रकाश डाला। 'आर्य लोक वार्ता' सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- दो अक्टूबर को जन्म लेना महज संयोग ही नहीं है, वरन् सौभाग्य की बात है। दो अक्टूबर को जन्मे गाँधी जी अपनी सादगी के लिए; श्री लाल बहादुर शास्त्री अपनी ईमानदारी के लिए विख्यात हुए; वहीं डॉ.आनन्द बरनवाल अपनी समन्वयवादी चेतना के लिए जाने जाते हैं। आर्य समाज राजाजी पुरम का विकास और विस्तार उनकी इसी समन्वयवादी चेतना का उज्ज्वल उदाहरण है। कार्यक्रम का संचालन श्री विजय मित्र द्विवेदी, उपप्रधान आर्य समाज ने किया तथा कार्यक्रम के अंत में डा.आनन्द बरनवाल ने सभी के प्रति आभार प्रदर्शन किया। विद्वानों को सम्मान तथा स्वल्पाहार वितरण की व्यवस्था की गई।

जोशी जी विदेश यात्रा पर

आर्य समाज आदर्श नगर के पूर्व प्रधान श्री पं.मदन मोहन जोशी अपनी धर्मपत्नी के साथ स्वास्थ्य लाभ हेतु पुनः अपने पुत्र के साथ नवम्बर के प्रथम सप्ताह में अमेरिका को रवाना हो रहे हैं। इससे पूर्व १८.१०.१४ से ३१.१०.१४ तक श्री जोशी जी अपनी पुत्री के पास नोएडा में रहेंगे। ईश्वर से हम सभी जोशी जी के स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234,
हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर,
लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना
कृपया शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।